Discover your divinity with us
A/C Showroom
ज्ञान गंगा ॐ मूर्ति माला केन्द्र
उजाला भवन स्टेशन रोड, दुर्ग
0788-4030383, 3293199
भगवान के वस्त्र, श्रृंगार मूर्तियां एवं समस्त पूजन सामग्री संगमरमर व पीतल की मूर्तियां राशि रत्न एवं उपरत्न उपलब्ध

राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

# समय दर्शन

ESTD : Since 2011

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक खबरों के साथ

श्री
दुर्ग शहर में सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य
माँ दुर्गा उपासक मां बगुलामुखी, माँ कामख्या, माँ भद्रकाली, माँ शतचंडी की असीम कृपा साधना द्वारा समस्त समस्याओं का मार्ग दर्शन हेतु
पं. एम.पी. शर्मा/
मो. 8109922001
फीस 251/- मात्र
पता:- श्री दुर्गा ज्योतिष कार्यालय सिकोला भाठा, सब्जी मार्केट के सामने, धमधा नाका, दुर्ग

वर्ष 06, अंक 149 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये रायपुर, मंगलवार 02 जुलाई 2024 www.samaydarshan.in

## सार समाचार

### पुणे में पिकनिक मनाने गया था परिवार, झरने में डूबने से 4 बच्चों समेत पांच की मौत

**पुणे।** लोनावाला हिल स्टेशन के निकट एक झरने में एक महिला और चार बच्चों सहित पांच लोग बह गए और डूब गए। लोनावाला पुलिस स्टेशन के प्रभारी मयूर अग्नवे ने बताया कि यह घटना रविवार दोपहर करीब दो बजे हुई। जब बच्चे व कुछ अन्य लोग भूशी बांध के पास पहाड़ी जंगलों में बह रहे झरने का आनंद लेने गए थे।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, घटना की शिकार महिला की उम्र करीब 40 वर्ष और बच्चों की उम्र 4 से 8 वर्ष के बीच है। ये सभी पुणे के सैय्यद नगर के निवासी थे। स्थानीय लोगों ने कहा कि वे झरने के तल पर काई लगे पत्थरों पर फिसलकर पानी के वेग में बह गए होंगे और डूब गए होंगे। अग्नवे ने बताया कि स्थानीय लोग और पुलिस की बचाव टीमें घटनास्थल पर पहुंच गई हैं।

ताजा जानकारी के अनुसार, इस घटना में 40 वर्षीय महिला और एक 13 वर्षीय और एक 8 वर्षीय लड़की की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि 4-9 वर्ष के तीन बच्चे लापता हैं, जिनकी तलाश की जा रही है। स्थानीय एसपी ने एक बयान में बताया कि ऐसा लगता है कि वे एक ही परिवार के सदस्य हैं और भुशी बांध से लगभग दो किलोमीटर दूर झरने में फिसल गए, जहां वे डूब गए। इस घटना में बच्चे लापता हैं।

पीएम मोदी के अलावा 5 मंत्रियों ने खड़े होकर टोका

# राहुल गांधी का संसद में 90 मिनट का भाषण :हिन्दू, अग्निवीर समेत 20 मुद्दों पर बोले

### माफी मांगें नेता प्रतिपक्ष-शाह

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** संसद सत्र के छठे दिन नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने मोदी सरकार और भाजपा को 20 से ज्यादा मुद्दों पर घेरा। उन्होंने हिन्दू, अग्निवीर, किसान, मणिपुर, हश्वश्वज्ञ, बेरोजगारी, नोटबंदी, त्वस्ज्ञ, स्र्स्क हिंसा, भय, धर्म, अयोध्या, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, अडाणी-अंबानी, प्रधानमंत्री और स्पीकर की चर्चा की।

उन्होंने 90 मिनट के भाषण की शुरुआत संविधान की कॉपी दिखाकर की। भाषण के दौरान सत्ता पक्ष और विपक्ष में जमकर तू-तू, मैं-मैं हुई। राहुल ने अग्निवीर, क्क्रू मोदी के परमात्मा से डायरेक्ट कनेक्शन और किसानों के स्र्स्क कानून की बात कही। इस पर पीएम 2 बार, शाह-राजनाथ 3-3 बार, शिवराज चौहान, किरेन रिजिजू और भूपेंद्र यादव ने एक-एक बार खड़े होकर टोका।



**राहुल के 3 बयान, जिन पर शाह, राजनाथ समेत 3 मंत्रियों ने जवाब दिया**

**1. बीजेपी डर फैला रही**

राहुल ने कहा- 'हिंदू डर नहीं फैला सकता।' बीजेपी डर फैला रही है। अयोध्या से शुरू करता हूं।'

राहुल के इतना कहने पर अमित शाह खड़े हुए। कहा, 'नियम इन पर लागू नहीं होता क्या। ये पूरी बीजेपी को हिंसा फैलाने वाला बता रहे हैं। हाउस ऑर्डर में नहीं है। सदन ऐसे नहीं चलेगा।'

**2. किसान ने एमएसपी मांगी, आपने कहा- नहीं मिलेगी**

राहुल गांधी ने कहा, 'किसानों ने ये कहा कि 16 लाख करोड़ उद्योगपतियों का कर्जा माफहो सकता है तो हमारा भी थोड़ा सा कर दीजिए. किसान ने स्र्स्क मांगी। आपने कहा क्या। आपने कहा कि आपको ये नहीं मिलेगी।'

कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान बोले- 'ये गलत बयानी कर रहे हैं। स्र्स्क पर खरीद जारी है। उनकी सरकार थी तब बताएं कि स्र्स्क पर कितनी खरीद होती थी। ये सत्यापित करें कि स्र्स्क पर खरीद नहीं हो रही। राहुल गांधी ने कहा कि एमएसपी विथ लीगल गारंटी सर, नॉट जस्ट एमएसपी।

**3.अग्निवीर पीएम का ब्रेन चाइल्ड**

राहुल ने कहा, 'पूरा देश जानता है कि ये सेना की स्कीम है। सेना जानती है कि ये स्कीम सेना की नहीं, पीएम का ब्रेन चाइल्ड है।'

राजनाथ सिंह ने आपत्ति जताई। कहा कि ये गलत बयानबाजी कर रहे हैं। राहुल के बयान को एक्सपंज करने की मांग की।

तब राहुल बोले 'इनको अच्छी लगती है, रखिए। हमारी सरकार आएगी हम हटा देंगे। अग्निवीर जवानों के खिलाफ, सेना के खिलाफहै।'

राजनाथ सिंह ने राहुल को गलत बयानी करके सदन को गुमराह नहीं करने के लिए कहा।

### 'राहुल गांधी हिंदुओं का अपमान नहीं कर सकते', भाई के बचाव में उतरी बहन प्रियंका गांधी



इस मामले पर राहुल गांधी की बहन प्रियंका गांधी ने उनका बचाव किया है। प्रियंका ने कहा कि मेरे भाई कभी भी हिंदुओं का अपमान नहीं करेंगे। उन्होंने भाजपा नेताओं के बारे में साफतौर पर बात की है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के भाषण पर आम आदमी पार्टी के सांसद राघव चड्ढा ने कहा कि मैं राज्यसभा में था, मैंने लोकसभा में उनका बयान नहीं सुना है लेकिन इस पर काफी चर्चा हो रही है और लोग उनकी काफी तारीफकर रहे हैं। वहीं, कांग्रेस सांसद राजीव शुक्ला ने कहा कि ये बहुत साफहै कि राहुल गांधी ने हिंदुओं के बारे में कुछ नहीं कहा। उन्होंने कहा कि बीजेपी के लोग खुद को हिंदू कहते हैं लेकिन आप हिंदू धर्म का पालन नहीं करते, हम सब हिंदू हैं, हम हिंदू धर्म का पालन करते हैं।

# कोल स्कैम: स्पेशल कोर्ट ने 11 दिन बढ़ाई सभी आरोपियों की न्यायिक रिमांड

**रायपुर (समय दर्शन)।** छत्तीसगढ़ के बहुचर्चित कोयला घोटाला मामले में गिरफ्तार निलंबित आईएएस रानू साहू और पूर्व ष्टरूभूपेश बघेल की उप सचिव रही सौम्या चौरसिया समेत 11 आरोपियों को सोमवार को रायपुर में **ACB/EOW** की स्पेशल कोर्ट में पेश किया गया। मामले में सुनवाई के बाद कोर्ट ने सभी आरोपियों की न्यायिक रिमांड को 11 दिन यानी 12 जुलाई तक के लिए बढ़ा दिया है। इससे पहले सौम्या चौरसिया ने जमानत याचिका लगाई थी, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया है।

बता दें कि राज्य आर्थिक अपराध ब्यूरो ने 18 जून को इस मामले से जुड़े 5 अन्य लोग मोइनुद्दीन कुरैशी, रोशन कुमार सिंह, पारेख कुमार कुर्रे, राहुल कुमार सिंह और मोंटू उर्फ वीरेंद्र कुमार जायसवाल को गिरफ्तार किया है। इन सभी पर आरोप है कि ये पांचों आरोपी जेल में बंद कारोबारी सूर्यकांत तिवारी के लिए रायपुर, कोरबा, सूरजपुर में रहकर कोल लेवी का काम करते थे। यह घोटाला कांग्रेस सरकार के दौरान हुआ था। प्रदेश में सत्ता परिवर्तन के बाद ईडी ने ईओडब्ल्यू में स्नद्बक्र दर्ज कराई है। श्वष्ठ ने छत्तीसगढ़ में 570 करोड़ रुपये के कोयला घोटाला का खुलासा किया था।





### ऑनलाइन परमिट को ऑफ लाइन किया

बता दें कि छत्तीसगढ़ में श्वष्ठ ने अवैध कोल लेवी वसूली का खुलासा किया था। श्वष्ठ का दावा है कि खनिज विभाग के तत्कालीन संचालक द्बस् समीर बिश्नोई ने 15 जुलाई 2020 को आदेश जारी कर कोल परिवहन में ऑनलाइन परमिट को ऑफलाइन कर दिया था, जिससे व्यापारियों से वसूली की जा सके। वहीं इस घोटाले का मास्टरमाइंड कोल व्यापारी सूर्यकांत तिवारी को माना गया है। ईडी के अनुसार निलंबित उपसचिव सौम्या चौरसिया से इन्हें संरक्षण मिलता था।

### 25 रुपये प्रति टन कोल लेवी की वसूली

ईडी के मुताबिक सूर्यकांत तिवारी ने 25 रुपये प्रति टन के हिसाब से अवैध रकम वसूलने के लिए एक सिंडिकेट बनाया था। व्यापारियों से अवैध रकम वसूलने के बाद ही उन्हें खनिज विभाग से पीट पास और परिवहन पास जारी किए जाते थे। इस मामले की जांच एसीबी-ईओडब्ल्यू द्वारा की रही है। इस मामले में सौम्या चौरसिया के अलावा सूर्यकांत तिवारी, कोल वॉशरी संचालक सुनील अग्रवाल, आईएएस समीर बिश्नोई, आईएएस रानू साहू सहित कई आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

# भारत ने विकसित किया दुनिया का सबसे खतरनाक विस्फोटक, चंद सेकंड में मचा देगा तबाही

**नईदिल्ली (एजेंसी)।** भारत रक्षा क्षेत्र में लगातार नई उपब्धियां हासिल कर रहा है. इसके साथ ही भारत रक्षा उत्पादन में भी पड़ोसी देशों को पीछे छोड़ता जा रहा है. इस बीच भारत ने एक ऐसा विस्फोटक पदार्थ तैयार किया है जो ट्राइनाइट्रोटॉल्विन से दोगुना ज्यादा घातक है. जिसे सेबेक्स 2 नाम दिया गया है. जिसे दुनिया के सबसे ताकतवर गैर-परमाणु विस्फोटकों में से एक माना जा रहा है.

इस विस्फोटक के इस्तेमाल से बमों, आर्टिलरी शेल्स और वारहेड्स की क्षमता में कई गुना बढ़ा देगा. यही नहीं इस नए विस्फोटक का वजन भी काफी कम है. सेबेक्स-2 के फॉर्म्युलेशन को भारतीय नौसेना ने सोमवार को टेस्टिंग के बाद सर्टिफाई भी कर दिया है.

इस विस्फोटक की भारतीय नौसेना के डिफेंस एक्सपोर्ट प्रमोशन स्कीम के तहत टेस्टिंग की गई है. इस विस्फोटक के इस्तेमाल से वर्तमान हथियारों की क्षमता में कई गुना की बढ़ोतरी होगी. यही नहीं भारत द्वारा विकसित कि गए इस विस्फोट को दुनियाभर की सेनाएं इस्तेमाल करने के लिए आगे आएंगी. बता दें कि इस इस विस्फोटक को मेक इन इंडिया के तहत, इकॉनोमिक एक्सपलोसिव लिमिटेड ने विकसित किया है.

बता दें कि किसी विस्फोटक की क्षमता या उसकी ताकत को टीएनटी से तुलना कर आंकी जाती है. टीएनटी का मतलब ट्राइनाइट्रोटॉल्विन है जो दुनिया का सबसे लोकप्रिय और ताकतवर विस्फोटक है. एक ग्राम टीएनटी के विस्फोट में निकलने वाली ऊर्जा लगभग 4000 जूल के बराबर होती है. एक मीट्रिक टन यानी एक हजार किलोग्राम टीएनटी के धमाके से जितनी ऊर्जा निकलती है उसे टीएनटी समतुल्य यानी टीएनटी के बराबर माना जाता है. जो जितना टीएमटी समतुल्य होगा वह विस्फोटक उतना ही ज्यादा घातक होगा.

# नीट-यूजी -एग्जाम का रिजल्ट जारी, घटी टॉपर्स की संख्या, किसी को नहीं मिले 720 में 720 अंक

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने 1563 कैंडिडेट्स के लिए दोबारा हुई नीट यूजी परीक्षा का रिजल्ट जारी कर दिया है। परीक्षा में शामिल हुए स्टूडेंट्स अपने नतीजे ऑफिशियल वेबसाइट **exams.nta.ac.in/NEET/** पर जाकर चेक कर सकते हैं। इससे पहले नीट यूजी रि-एग्जाम की फाइनल आंसर-की 30 जून को दोपहर 1:30 बजे जारी हुई थी। एनटीए ने पहले नीट यूजी परीक्षा में 1563 कैंडिडेट्स को ग्रेस मार्क्स दिया गया था। लेकिन विवाद होने पर इस ग्रेस मार्क्स को रद्द करके दोबारा परीक्षा आयोजित करने का फैसला किया गया। दोबारा हुई नीट परीक्षा में 1,563 में से 813 स्टूडेंट्स शामिल हुए थे। परीक्षा का आयोजन देश के उन्हीं 6 केंद्रों पर दोबारा किया गया था, जहां पर ग्रेस मार्क्स दिये गए थे। एक रिपोर्ट के अनुसार, एनटीए के सूत्रों ने बताया है कि दोबारा नीट यूजी परीक्षा देने वाले 813 उम्मीदवारों में से किसी ने भी 720/720 अंक नहीं हासिल किया है, साथ ही टॉपर्स की संख्या 67 से घटकर 61 हो गई। रिपोर्ट के अनुसार, 720/720 का परफेक्ट स्कोर हासिल करने वाले छह में से पांच कैंडेट्स ने दोबारा परीक्षा दी थी। उन्होंने 680 से ऊपर अंक हासिल किए हैं। आंकड़ों के अनुसार, चंडीगढ़ के दो उम्मीदवारों में से कोई भी परीक्षा में शामिल नहीं हुआ। छत्तीसगढ़ से कुल 602 में से 291 छात्र, गुजरात से 1 छात्र, हरियाणा से 494 में से 287 और मेघालय के तुरा से 234 छात्र परीक्षा में शामिल हुए थे।

# दंड के स्थान पर न्याय को प्राथमिकता देने वाले कानून देशभर में लागू : मुख्यमंत्री साय

### मुख्यमंत्री ने तीन नए आपराधिक कानूनों पर आधारित पुस्तक का किया विमोचन

### छत्तीसगढ़ पुलिस की इस विशेष पहल से नवीन कानूनों को समझना होगा आसान



**रायपुर (समय दर्शन)।** मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा है कि 1 जुलाई 2024 हमारे देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। आज से देश भर में तीन नए आपराधिक कानून लागू हो रहे हैं। ये सभी कानून डेढ़ सौ वर्ष पहले अंग्रेजों द्वारा लागू कानूनों के स्थान पर प्रभावशील होंगे। यह परिवर्तन हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के दृढ़ संकल्पों को दर्शाता है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय आज अपने निवास कार्यालय रायपुर में गृह विभाग द्वारा नवीन आपराधिक कानूनों पर आधारित पुस्तिका के विमोचन के मौके पर यह बातें कही।

मुख्यमंत्री श्री साय ने गृह विभाग के अधिकारियों की सराहना करते हुए कहा कि आप सभी ने जागरूकता और प्रशिक्षण की दृष्टि से बहुत अच्छा प्रयास किया है। ये तीनों कानून सभी नागरिकों को न्याय प्रदान करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं और प्रदेश में इसका बेहतर क्रियान्वयन हो, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम के नाम में ही इनके उद्देश्य भी समाहित हैं। इनमें दंड के स्थान पर न्याय को प्राथमिकता दी गई है। ये कानून भारत सरकार की न्याय और सुरक्षा की गारंटी को पूरा करने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा के निर्देश पर पूरे प्रदेश के पुलिस थानों में आज के दिन को उत्सव की तरह मनाया जा रहा है। इन कानूनों की जानकारी देने के उद्देश्य से व्यापक स्तर पर लोगों को जागरूक करने की दिशा में पहल की जा रही है।

विमोचन कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव मनोज पिंगुआ और पुलिस महानिदेशक अशोक जुनेजा ने नए कानूनों के प्रदेश स्तर पर बेहतर क्रियान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। न्याय दिलाने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए अंतर्विभागीय समन्वय के साथ विवेचना और कार्यवाही पर जोर दिया। अधिकारियों ने बताया कि नए कानूनों के अंतर्गत दो एफ्आईआर और एक मर्ग दर्ज हो चुका है।

# छत्तीसगढ़ शराब घोटाला: 10 हजार से ज्यादा पन्नों की चार्जशीट

### रायपुर कोर्ट में ईओडब्ल्यू ने ढेबर, अरुणपति, अरविंद और ढिल्लन के खिलाफ पेश किया चालान

**रायपुर (समय दर्शन)।** छत्तीसगढ़ के बहुचर्चित 2161 करोड़ से अधिक के शराब घोटाला मामले में राज्य आर्थिक अपराध अन्वेषण और एंटी करप्शन ब्यूरो ने सोमवार को रायपुर की कोर्ट में चालान पेश किया। आरोपी होटल कारोबारी अनवर ढेबर, आबकारी विभाग के पूर्व अधिकारी अरुणपति त्रिपाठी सहित अन्य गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ प्रॉसिक्यूशन कंप्लेंट फाइल की गई है। आरोपियों के खिलाफ 10 हजार से अधिक पन्नों का चालान पेश किया गया। आबकारी घोटाला में अब आरोपियों की मुश्किलें और बढ़ सकती है। शराब घोटाला में नकली होलोग्राम पर नोएडा में भी एक स्नद्बक्र दर्ज है।

**EOW** ने करीब दो दर्जन पैकेट में 10 हजार से अधिक पन्नों में यह चालान और एनेक्स्चर पेश किया है। श्वष्ठ ने पिछले तीन वर्ष में कुल 2161 करोड़ के शराब घोटाले का खुलासा किया है। **EOW** के चालान में **ED** की रिपोर्ट पर की गई गिरफ्तारी और जांच का उल्लेख है। ईडी ने 17 जनवरी 2024 को ईओडब्लू में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। ईडी ने उससे 10 महीने पहले मार्च 2023 को भी ईओडब्लू को रिपोर्ट दी थी, लेकिन छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सरकार होने से एफआईआर नहीं हो सकी थी, क्योंकि घोटाले के सभी आरोपी कांग्रेस सरकार, संगठन और सरकारी सेवा से जुड़े लोग हैं। छत्तीसगढ़ में सरकार बदलने के बाद जांच में तेजी आई और करीब पांच महीने के बाद **EOW** ने यह चालान पेश किया है। सूत्रों के अनुसार प्रस्तुत किया गया चालान 10 हजार पन्नों से अधिक का है। इस चालान में अरुणपति त्रिपाठी के अलावा अन्य गिरफ्तार आरोपी अनवर ढेबर, रिटायर्ड आईएएस अधिकारी अनिल टुटेजा, यश टुटेजा, निरंजन दास, विवेक ढांड, अरविंद सिंह, विजय भाटिया, त्रिलोक सिंह ढिल्लन, तत?कालीन आबकारी मंत्री कवासी लखमा सहित 70 से अधिक लोगों को नामजद आरोपी बनाया गया है। सूत्रों के मुताबिक, इस मामले में और लोगों की गिरफ्तारियां होगी। जैसे ही शराब घोटाले मामले में अन्य गिरफ्तारियां होंगी, ब्यूरो की ओर से अनुपूरक (सप्लीमेंटरी) चालान भी पेश किया जाएगा।

# जून में सामान्य से 11 फीसदी कम हुई बरसात

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** अलग-अलग कारणों से बदल रहे मौसम और अचानक होने वाली बारिश के बावजूद जून, 2024 में सामान्य से कम बारिश हुई है। मौसम विभाग की तरफ से जारी ताजा आंकड़ों के मुताबिक जून में 11 फीसदी कम बारिश दर्ज की गई है। आईएमडी ने बकाया कि देश में जून महीने में औसतन 165.3 एमएम बारिश होती है, लेकिन इस साल केवल 147.2 मिमी बारिश दर्ज की गई। 2001 के बाद यह सातवीं सबसे कम बारिश वाला महीना रहा। बीते पांच साल में कभी भी जून में 11 फीसदी कम बारिश नहीं देखी गई।

### मानसून की समय से पहले दस्तक के बावजूद बारिश के अनुकूल हालात नहीं

मौसम विभाग के मुताबिक महाराष्ट्र तक मानसून सामान्य रूप से आगे बढ़ा, लेकिन इसके बाद बारिश के अनुकूल हालात नहीं बने। पश्चिम बंगाल, ओडिशा, झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में कमजोर मानसून के कारण बारिश का इंतजार बढ़ गया। इस कारण उत्तर पश्चिम भारत में भीषण गर्मी का असर और अधिक बढ़ गया। मौसम विभाग प्रमुख मृत्युंजय महापात्र ने कहा, देश में 11 जून से 27 जून तक सामान्य से कम वर्षा दर्ज की गई। इसके कारण कुल मिलाकर सामान्य से कम बरसात दर्ज की गई। द्बरूस्ठ के मुताबिक उत्तर पश्चिम भारत में 33 प्रतिशत कम बारिश हुई, जबकि मध्य भारत में 14 फीसदी की गिरावट देखी गई। पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत में 13 फीसदी कम बारिश रिकॉर्ड की गई। केवल दक्षिण भारत में ही 14 फीसदी अतिरिक्त बारिश दर्ज की गई। आईएमडी ने बताया कि देश में चार महीनों के मानसून सीजन के दौरान कुल 87 सेंटीमीटर बारिश हुई है। इसमें 15 फीसदी बरसात जून के महीने में हुई है। 30 मई को केरल और पूर्वोत्तर भारत के क्षेत्रों में मानसून ने समय से पहले दस्तक दी थी। इस आधार पर अनुमान था कि बारिश अच्छी होगी। हालांकि, आंकड़े सामने आने के बाद 11 फीसदी की कमी दर्ज की गई है। मौसम विभाग प्रमुख मृत्युंजय महापात्र ने कहा, देश में 11 जून से 27 जून तक सामान्य से कम वर्षा दर्ज की गई। इसके कारण कुल मिलाकर सामान्य से कम बरसात दर्ज की गई। आईएमडी के मुताबिक उत्तर पश्चिम भारत में 33 प्रतिशत कम बारिश हुई, जबकि मध्य भारत में 14 फीसदी की गिरावट देखी गई। पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत में 13 फीसदी कम बारिश रिकॉर्ड की गई। केवल दक्षिण भारत में ही 14 फीसदी अतिरिक्त बारिश दर्ज की गई।

## संक्षिप्त समाचार

### शासकीय क्षेत्रीय मुद्रणालय में सेवानिवृत्त कर्मचारी कमल कुलदीप को बिदाई

**राजनांदगांव।** स्थानीय शासकीय क्षेत्रीय मुद्रणालय के वरिष्ठ कर्मचारी (सीनियर बाइंडर) कमल कुलदीप के द्वारा अपनी अधिवार्षिकी सेवा पूर्ण करते हुए शासकीय सेवा से मुक्त होने के अवसर पर उन्हें भावभीनी बिदाई दी गयी। उक्ताशय की जानकारी प्रदान करते हुए छत्तीसगढ़ प्रदेश तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी संघ के जिला सचिव तथा विभागीय उप समिति के जिला संयोजक आनंदकुमार श्रीवास्तव ने कहा कि शासकीय क्षेत्रीय मुद्रणालय राजनांदगांव के सहायक संचालक नकुल ध्रुव के प्रमुख आतिथ्य में मुद्रणालय के समस्त कर्मचारी साथियों ने बिदाई कार्यक्रम का आयोजन करते हुए अपने वरिय साथी कमल कुलदीप को स्नेहिल बिदाई दी। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि नकुल ध्रुव (सहायक संचालक) ने प्रेरक उद्बोधन देते हुए सेवानिवृत्त कर्मचारी के सुखी, यशस्वी दीर्घायु जीवन की कामना की। इसके साथ ही यात्री बैग, स्टील का पानी का ड्रम, दीवाल घड़ी, मोमेंटो (स्मृति-चिह्न), अभिनंदन-पत्र व विभिन्न उपहारों सहित सहायक संचालक श्री ध्रुव की ओर से व्यक्तश: भेंट भी उपहार-स्वरूप प्रदान किए गये। अंत में स्वल्पाहार की व्यवस्था की गयी थी। इस अवसर पर कमल यादव, राबिन्सनए राकेश अहिरवार, जेम्स ओलीवर मिंज, शलेंद्र खोब्रागढ़े, देवेन्द्र राव, मदन लाल कोल, तुवेन्द चौहान, रवि साहू, राहुल खैरवार, अनुसूईया चंदेल, आशा सावरकर, गजानंद देवांगन, सुरेश कुलदीप, विजय देवांगन, हरीराम साहू, मेहतर कोयले, राकेश यादव, आदि कर्मचारी साथी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए आनन्दकुमार श्रीवास्तव (जिला सचिव व जिला संयोजक, संघ) ने कार्यक्रम की सफ्लता के लिए समस्त कर्मचारी साथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

### राज्य स्तरीय पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में संस्कारधानी के खिलाड़ियों ने लहराया परचम

**राजनांदगांव।** विगत दिनों रायपुर में आयोजित राज्य स्तरीय पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में राजनांदगांव के बजरंग व्यायाम शाला के खिलाड़ियों ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करते हुए तीन मेडल जीते। बजरंग व्यायाम शाला के कोच घनश्याम श्रीरंग ने जानकारी देते हुए बताया कि 16 जून से आयोजित प्रदेश स्तरीय पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में बजरंग व्यायाम शाला के श्रेयांश हटवार ने 170 किलोग्राम स्मट मार कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं मुकेश कहर ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करते हुए 66 किलो ग्राम कैटेगरी में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए गोल्ड मेडल हासिल किया। पूर्व में भी मुकेश ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में गोल्ड लाकर राजनांदगांव शहर एवं बजरंग व्यायाम शाला परिवार को गौरान्वित किया है। आयुष शर्मा ने भी द्वितीय स्थान प्राप्त कर मेडल लेकर संस्कारधानी राजनांदगांव का परचम लहराया। उक्त अवसर पर बजरंग व्यायाम शाला के पूर्व अध्यक्ष संरक्षक व ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सूर्यकांत जैन ने सभी विजय खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें मेडल पहनाकर एवं मिठाई खिलाकर मुंह मीठा कराया, उन्हें अच्छे खेल के लिए बधाई और शुभकामनाएं दी और सदैव उनके उत्कृष्ट खेल को बढ़ावा देने और खेल को बढ़ाने के लिए हर संभव मदद करने की बात कह कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उक्त अवसर पर बजरंग व्यायाम शाला के महेश अग्रवाल, संजू गायधाने,ए मोहन चुनरकर, संतोष हटवार, राजा खान, सोमिल जैन, पौरुष अग्रवाल, विक्की कौशिक, योगेश साहू, लकी कौशिक, विमल निषाद, शैलेश सिंह, चुरामन रजक, तेजस हेडाऊ सहित व्यायाम शाला परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

### निधन: श्रीमती पद्मनी सोनवानी

**पाटन ।** ब्लॉक के ग्राम पंचायत चुनकट्टा के सरपंच भूषण सोनवानी की पत्नी श्रीमती पद्मनी सोनवानी उम्र 36 साल का निधन हो गया। वे पिछले कुछ दिनों से बीमार थी जिसका इलाज अस्पताल में चल रहा था। उनका अंतिम संस्कार आज सोमवार को शाम चार चुनकट्टा में किया गया। उनके निधन पर सरपंच और पंचायत सचिव संघ ने शोक जताया है।

# छग जर्नलिस्ट वेलफेयर यूनियन प्रदेश कार्यसमिति की बैठक संपन्न

**मनाया गया प्रदेश अध्यक्ष अमित गौतम का जन्म दिवस**

**नरेश बने जिलाध्यक्ष कांकेर, शमशेर को दुर्ग की कमान**

**रायपुर (समय दर्शन)।** प्रदेश के पत्रकारों के सशक्त संगठन छग जर्नलिस्ट वेलफेयर यूनियन कि प्रदेश कार्यसमिति की बैठक 28 जून 2024 को रायपुर स्थित होटल महेंद्रा में संपन्न हुई । बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश के पत्रकारों के हित में महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई साथ ही आने वाले 9 दिसंबर को होने वाले यूनियन के त्रिवार्षिक चुनाव को लेकर भी विचार विमर्श किया गया ।

बैठक में यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष अमित गौतम द्वारा जिला अध्यक्षों को अपने-अपने जिलों में सक्रियता के साथ कार्य करने के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दों पर कार्य करते हुए शिविर आयोजित करवाने के लिए भी दिशा निर्देश दिया गया।

यूनियन के इस महत्वपूर्ण बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष महेश आचार्य, प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती कमलेश सारस्वत, प्रदेश महासचिव कन्हैया गोयल, प्रदेश सचिव विपुल कनैया, प्रदेश सचिव पी के तिवारी, प्रदेश संगठन सचिव मुन्नीलाल अग्रवाल, प्रदेश संगठन सचिव सुशील तिवारी,प्रदेश संयुक्त सचिव श्रीमती तिलका साहू, प्रदेश सह सचिव विनय चौरसिया, दुर्ग संभाग अध्यक्ष

विवेक मिश्रा,दुर्ग संभाग उपाध्यक्ष संतोष देवांगन, जिला अध्यक्ष बिलासपुर अनिल शुक्ला, जिला अध्यक्ष महासमुंद बलराज नायडू, जिला अध्यक्ष दुर्ग शमशेर खान, जिला अध्यक्ष कोरबा विजय लाल,जिला महासचिव महासमुंद सुखदेव वैष्णव, जिला महासचिव दुर्ग रवि सोनकर, जिला अध्यक्ष शक्ति रमेश अग्रवाल, जिला अध्यक्ष मुंगेली परमेश्वर कुर्रे, जिला सचिव मुंगेली राजेश खन्ना मोहले, वरिष्ठ पत्रकार रायपुर मंदिप सिंह,अभिषेक सावल,पत्रकार राहुल सेन,श्रीवांशु श्रीवास्तव, तामेश्वर साहू, चीनू तांडी,कांकेर जिला अध्यक्ष नरेश भीमगज,उपाध्यक्ष मन्नूराम कावडे, जिला महासचिव विकास अभोरे,जिला कोषाध्यक्ष हेमंत बेश्रा सहित काफी संख्या में पत्रकार बैठक में सम्मिलित रहे ।

बैठक के दौरान कांकेर जिला अध्यक्ष पद पर नरेश भीमगज,जिला महासचिव विकास अंभोरे, जिला उपाध्यक्ष मन्नूराम कावड़े,जिला कोषाध्यक्ष हेमंत बेश्रा को नियुक्त किया गया इसके साथ ही दुर्ग जिले में परिवर्तन करते हुए जिले के वरिष्ठ पत्रकार शमशेर खान को जिला अध्यक्ष दुर्ग की जिम्मेदारी सौंप गई वहीं पूर्व जिला अध्यक्ष रवि सोनकर को जिला महासचिव का नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया ।

बैठक में सभी पत्रकारों ने यूनियन की मजबूती के विषय में अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए कार्यक्रम के अंत में यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष अमित गौतम का जन्मदिन केक काटकर मनाया गया सभी ने यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष के उज्जवल जीवन की कामना की ।

कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन यूनियन के प्रदेश उपाध्यक्ष महेश आचार्य ने किया ।

# पीएचई विभाग द्वारा सड़क पर किए गए गड्ढों को ढक कर पहले जैसे सड़क को करने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

**अगर जल्द नही सही किया गया रोड को तो युवा कांग्रेस करेगी पीएचई कार्यालय का घेराव**

**जनहितो में उक्त जनता की मांग को एसडीएम को रखा युवा कांग्रेस ने**

**सारंगढ़ (समय दर्शन)।** आज सारंगढ़ में युवा कांग्रेस टीम जिलाध्यक्ष शुभम बाजपाई के नेतृत्व में पहुंची एस डी एम कार्यालय । पीएचई विभाग द्वारा नल जल के लिए सड़कों पर किए गए गड्ढों से जनता को हो रही परेशानियों को लेकर एस डी एम की अनुपस्थिति में तहसीलदार को ज्ञापन सौप मांग रखी की सड़के पहले की तरह हो जिस पर तहसीलदार मैडम ने जल्द से जल्द विभाग को निर्देशित करने की बात कही ।

जिलाध्यक्ष शुभम बाजपाई ने कहा अगर जल्द से जल्द सड़के पहले की तरह नहीं होती है तो पूरी युवा कांग्रेस टीम सड़क में आकर प्रदर्शन करेगी और श्रद्धद्व ऑफ्सि का घेराव करेगी। उक्त ज्ञापन देते समय एनएसयूआई जिलाध्यक्ष अभिषेक शर्मा आशीष नंदे नावेद खान सहजहा खान शुभम यादव विशाल आनंद योगेश मनहर योगेश सोनवानी नवीन यादव अविरल यादव हारून खान व युवा कांग्रेस एनएसयूआई के साथी उपस्थित रहे।

# मुक्तिधाम मे शेड के अभाव से क्रिया कर्म मे हो रही परेशानी

**पिथौरा( समय दर्शन)।** पिथौरा रायपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित ग्राम झलप में जर्जर हो चुके मुक्तिधाम में बारिश के समय दाह संस्कार में ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

ग्रामीणों के अनुसार ग्राम छिलपावन से करीब एक किमी दूर मुक्तिधाम बनाया गया है। जहां ग्रामीण अंत्येष्टि के लिए जाते है। छिलपावन पॉवर हाउस के समीप स्थित इस मुक्तिधाम में न तो शव के अंतिम संस्कार के लिए शेड है और न ही शव के अंत तक साथ आए परिजनों एवं मित्र परिजनों के बैठने या बारिश एवं गर्मी में सर छुपाने के कोई शेड ही बनाया गया है। यहां का मुक्तिधाम देखने से प्रतीत होता है

कि, यह पुरातन जमाने का मुक्तिधाम हो।

ज्ञात हो कि प्रदेश की पंचायतों में शासन द्वारा मुक्तिधाम योजना के तहत सभी ग्रामों में मुक्ति धाम बनाने के लिए पर्याप्त आबंटन दिया जाता है, बावजूद इसके उक्त ग्राम में मुक्ति धाम की जर्जर स्थिति स्वयं अपनी कहानी बयां कर रही है।

# उत्तर पाटन भाजपा मंडल ने सुनी मन की बात, पीएम मोदी की अपील से प्रेरित होकर स्वामी आत्मानंद स्कूल में किया पौधरोपण

**पाटन (समय दर्शन)।** उत्तर पाटन मंडल अम्लेश्वर नगर पालिका क्षेत्र में देश के यशश्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी के द्वारा ,,मन की बात ,, का 111 वा एपीसोड को मंडल अध्यक्ष लोकमनी चंद्राकर के साथ पालिका क्षेत्र के भा ज पा के पदाधिकारीयों एवं कार्यकर्ताओ ने श्रवण किया। पश्चात मंडल अध्यक्ष लोकमनी चंद्राकर ने अपने संबोधन में कार्यकर्ताओ से कहा कि आप सभी देवतुल्य कार्यकर्ताओ की बदौलत प्रदेश और देश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है। निश्चित रूप से आप सभी बधाई और अभिनंदन के पात्र है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने मन की बात कार्यक्रम से देश और विदेशों की संस्कृति वहा निवास कर रहे लोगो के जीवन यापन से जुड़े अप्रत्याशित घटनाओं को देश के एक सौ चालीस करोड़ जनता के सामने मजबूती के साथ रखकर सशक्त और एक अच्छे जनसेवक होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। सांसद प्रतिनिधि फेरहा राम धीवर जी ने भी अपने विचार रखे। इसके बाद आगामी निकाय चुनाव के तैयारियों के संबंध में लोकमनी चंद्राकर जी ने आवश्यक दिशा निर्देश और सुझाव कार्यकर्ताओ के साथ साझा किया। एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम के तहत अम्लेश्वर के स्वामी आत्मानंद हायर सेकेण्डरी स्कूल के खेल मैदान एवं प्राथमिक शाला परिसर में वृक्षारोपण किया गया।कार्यक्रम में मुख्य रूप से मंडल अध्यक्ष लोकमनी चंद्राकर जी,महामंत्री कैलाश यादव,सांसद प्रतिनिधि फेरहा राम धीवर, नगर अध्यक्ष डॉ आलोक पाल ,दयानंद सोनकर युवा मोर्चा अध्यक्ष मोहन साहु,रामाधार साहु,शिवकुमार साहु,धर्मेंद्र सोनकर,सुखदेव साहु, महिला मोर्चा के महामंत्री लक्ष्मी देवांगन, उपाध्यक्ष भारती यादव,सुनीता साहु, युवा मोर्चा के महामंत्री राजु साहु, युवा मोर्चा के नगर अध्यक्ष कमलेश साहु, धनेश यादव,राहुल साहु,रामकुमार साहु,वेदांत चतुर्वेदी ,सुनील शर्मा,मृत्युंजय देवांगन,विकास सोनी,मनोहर साहु,कुमार साहु,नोहर साहु,सुमित साहु, ललित यदु,प्रकाश कश्यप टीकम यादव, अमित गेंद्रे सहित कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

# राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर मेटल माइंस वर्कर्स यूनियन (इंटक) शाखा किरंदुल द्वारा चिकित्सकों का किया गया सम्मान

**किरंदुल (समय दर्शन)।** राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर मेटल माइंस वर्कर्स यूनियन (इंटक) शाखा किरंदुल के अध्यक्ष विनोद कश्यप एवं सचिव ए.के. सिंह के मार्गदर्शन में श्रम संघ के पदाधिकारियों, सदस्यों द्वारा एनएमडीसी परियोजना चिकित्सालय किरंदुल के समस्त चिकित्सकों को सम्मानित किया गया। देश के महान चिकित्सक, स्वतंत्रता सेनानी एवं पश्चिम बंगाल के द्वितीय मुख्यमंत्री भारत रत्न डॉ. बिधान चन्द्र रॉय जी की जयंती एवं पुण्यतिथि दोनों ही 1 जुलाई को पड़ती है, उनके पुण्य स्मरण में प्रतिवर्ष राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस मनाया जाता है। एमएमडब्ल्यू यूनियन (इंटक) के कार्यकारी अध्यक्ष चिन्नास्वामी एवं कार्यालय सचिव राजेन्द्र यादव द्वारा यूनियन की ओर से बधाई एवं शुभकामनायें देते हुए मनुष्य के जीवन के प्रत्येक पड़ाव में

चिकित्सकों के अतुलनीय योगदान, सुस्वास्थ्य एवं जीवन रक्षा के लिए उनके सेवा एवं समर्पण की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। यूनियन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा मानव कल्याण के लिए चिकित्सकों के योगदान की सराहना की गई। परियोजना चिकित्सालय के मुख्य चिकित्सा अधिकारी मनोज वी लाल ने सम्बोधित करते हुए लोगों की सेवा में सदैव ततपर रहने की बात कही और सभी से सहयोग की अपेक्षा की साथ ही उन्होंने सम्मान के लिए मेटल माइंस वर्कर्स यूनियन (इंटक) का आभार व्यक्त किया। संगठन सचिव राकेश लाल द्वारा मंच संचालन एवं उपाध्यक्ष त्रिलोक बांधे द्वारा आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर डॉ मनीषा लाल, डॉ रजनीश शाह, डॉ अंजू शाह, डॉ एम के चौधरी सहित समस्त चिकित्सक गण, समस्त अस्पताल स्टॉफ मेटल माइन्स वर्कर्स यूनियन के हेमन्त चौरसिया, सैयद जिया उल हसन, बी लोहिदास, एम. के. मल्लाह, पलक राम साहू, इम्तियाज, ईमरान सहित अस्पताल के समस्त स्टॉफ एवं यूनियन के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

# सारंगढ़ के कोतवाली थाना में किया गया तीनों कानूनों का शुभारंभ कार्यक्रम

**भारत में भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य संहिता 2023 लागू**

**सारंगढ़ बिलाईगढ़ (समय दर्शन)।** तीन कानून के शुभारंभ अवसर पर 1 जुलाई को सारंगढ़ के सिटी कोतवाली में नए कानून की जानकारी देने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कलेक्टर धर्मेश साहू, पुलिस अधीक्षक पुष्कर शर्मा, स्थानीय नागरिकों के मुख्य आतिथ्य एवं परियोजना निदेशक पंचायत हरिशंकर चौहान, एसडीएम अनिकेत साहू , पुलिस एएसपी कमलेश्वर चंदेल के विशिष्ट आतिथ्य में थाना परिसर सारंगढ़ में कार्यक्रम का श्रीगणेश 11 बजे हुआ। कार्यक्रम का संचालन सिटी कोतवाली थाना प्रभारी कामिल हक के द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर धर्मेश साहू ने अपने उद्बोधन में कहा कि - अभी तक भारतीय दंड संहिता के रूप में व्यवस्थाएं संचालित थी, लेकिन 1 जुलाई 2024 से यह भारतीय न्याय संहिता के रूप में

चलाई गई है । लॉर्ड मैकाले के द्वारा अर्थात अंग्रेजियत वाले आईपीसी के कानून आज से खत्म हो गई और इसके जगह बने तीन नए आपराधिक कानून लागू हो गए। इनमें भारतीय न्याय संहिता 2023 , भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 लागू हो गई है। कलेक्टर श्री साहू के द्वारा अन्य बहुत से उपयोगी जानकारी पत्रकार, गणमान्य नागरिक , एनसीसी कैडेट, विधि छात्र और जनप्रतिनिधियों को दी गई। आभार प्रदर्शन एसडीएम अनिकेत साहू के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे पुलिस अधीक्षक पुष्कर शर्मा ने बताया कि आज इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल रिकॉर्ड को साक्षी के रूप में मान्यता नए कानून के द्वारा दी गई है। डिजिटल रिकॉर्ड की स्वीकार्यता, इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड की स्वीकार्यता दी गई है। तीनों कानून में धाराएं बदली गई है और नई धाराएं जोड़ी गई है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि

पुलिस एएसपी कमलेश चंदेल ने कहा कि - नये आपराधिक कानून आज से औपनिवेशिक मानसिकता व उसके प्रतीकों से मुक्त किया गया है। यह कानून दंड के बजाय पूरी तरह से न्याय पर ध्यान केंद्रित करता है। इस कानून का उद्देश्य सबके साथ समान व्यवहार करना है। वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर यह कानून बनाया गया है।

मंच संचालन करते हुए सिटी कोतवाली थानेदार कामिल हक ने कहां कि- भारतीय दंड संहिता 1860 अब भारतीय न्याय संहिता 2023 के नाम से जाना जाएगा। भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता 1898 अब भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 के रूप में जाना जाएगा। भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 अब भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 के रूप में जाना जाएगा। नया कानून तैयार करने के लिए विधि विशेषज्ञों की टीम व विभिन्न संस्थाओं से अभिमत लेकर 4 वर्ष 3 माह 19 दिन में भारतीय न्याय संहिता को तैयार किया गया है जो 1 जुलाई 2024 से पूरे देश में लागू हो गया है। कार्यक्रम में गणमान्य नागरिक, एनसीसी कैडेट, महिला जनप्रतिनिधि, पत्रकारगणों की उपस्थिति रही जिसमें पवन कुमार अग्रवाल, निखिल केशरवानी, वीरेंद्र निराला, अजय अग्रवाल, पत्रकार भरत अग्रवाल, ओमकार केशरवानी, दीपक थवाईत, गोविंद बरेठा, संजय मानिकपुरी, के साथ साथ अन्य पत्रकार उपस्थित थे।

सार समाचार

## गांजा के साथ दो गिरफ्तार

**रायपुर( समय दर्शन )।** टिकरापारा पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर नया बस स्टेण्ड के पास गांजा के साथ महिला व पुरूष को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से 13 किलो 200 ग्राम गांजा जब्त किया है। मिली जानकारी के अनुसार पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि नया बस स्टेण्ड भाठागांव के गेट नंबर 1 के पास एक महिला व पुरूष संदिग्ध लग रहे है। सूचना पर मौके में पहुंची पुलिस ने दोनों को घेराबंदी कर पूछताछ किया तो अपना नाम पुष्पेन्द्र सिंह 25 वर्ष व विनिता सिंगोरे 32 वर्ष बताया। उन लोगों के पास रखे थैले की तलाशी ली तो उसमें 13 किलो 200 ग्राम गांजा मिला। मामले में पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई किया है।

## महिला से मारपीट

**रायपुर( समय दर्शन )।** गावलीपारा बैरनबाजार में चार लोगों ने एक महिला से गाली-गलौज कर मारपीट किया। प्रार्थिया की शिकायत पर कोतवाली पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थिया कोमल यादव 29 वर्ष गावलीपारा बैरनबाजार की रहने वाली है। बताया जाता है कि प्रार्थिया के पड़ोस में रहने वाली गुड़िया, नंदू, चिंटू व रानी यादव ने प्रार्थिया के बच्चे से गाली-गलौज कर रही थी। जिससे प्रार्थिया ने मना किया तो आरोपियों ने प्रार्थिया से गाली-गलौज कर मारपीट किया। प्रार्थिया की शिकायत पर कोतवाली पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ धारा 294,506,323,34 के तहत अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

## मूणत ने किया करबला तालाब का निरीक्षण

**रायपुर( समय दर्शन )।** विधायक राजेश मूणत आज सुबह 7:00 से रायपुर नगर निगम के अधिकारी स्मार्ट सिटी के अधिकारियों के साथ एवं वहाँ के स्थानीय वरिष्ठ नागरिकों के साथ कर्बला तालाब में चल रहे विकास कार्यों का निरीक्षण किया। वरिष्ठ नागरिकों से विकास कार्यों के संदर्भ में सुझाव मांगे। अच्छे सुझाव के अनुरूप ही विकास कार्यों को गति प्रदान की जाएगी। वहीं जाम को लेकर युंका नेता पंडित सीमांत दीक्षित अपने साथियों के साथ रायपुर पश्चिम विधायक राजेश मूणत से मिलकर महादेव घाट जाने वाले मुख्य मार्ग पर मंदिर परिसर के नज़दीक में मछली और सब्जी बाजार को विसर्जन कुंड के पास खाली मैदान में लगाने हेतु आग्रह किया है। उन्होनें बताया कि सुबह और शाम को अक्सर इस रोड में भीड़भाड़ रहने से जाम की स्थिति निर्मित हो जाती है। रोजाना ऐसी स्थिति बनती है।

### आदिवासी गोंड़ समाज मांवली महासभा द्वारा आयोजित सांस्कृतिक भवन लोकार्पण एवं रानी दुर्गावती बलिदान दिवस समारोह में शामिल हुए मुख्यमंत्री

# आजादी की लड़ाई में जनजातीय समाज का महत्वपूर्ण योगदान - मुख्यमंत्री साय

**रायपुर( समय दर्शन )।** मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज भाटापारा नगर के कृषि उपज मंडी परिसर में आदिवासी गोंड़ समाज माँ मांवली महासभा द्वारा आयोजित सांस्कृतिक भवन लोकार्पण एवं रानी दुर्गावती बलिदान दिवस समारोह में शामिल हुए। इस दौरान समाज के पदाधिकारियों ने साफा पहनाकर उनका स्वागत किया। साय ने सम्मेलन में आदिवासी समाज के सामाजिक भवन के आहता निर्माण हेतु 22 लाख रूपये, वहां तक सीसी रोड के लिए 25 लाख रूपये की घोषणा की है। साथ ही गुर्रा से जोगीद्वीप मेला स्थल तक सड़क निर्माण हेतु 1 करोड़ 30 लाख रूपये की घोषणा की। उन्होंने इसके अतिरिक्त तरेंगा से दौरेंगा तक सड़क निर्माण के लिए प्रस्ताव बनाकर शासन को प्रेषित करने के निर्देश कलेक्टर को दिए। मुख्यमंत्री ने मुख्य मंच से प्रधानमंत्री आवास योजना के 5 हितग्राहियों को घर की चाबी, 3 हितग्राहियों को आयुष्मान कार्ड, 4 हितग्राहियों को जाति प्रमाण पत्र एवं समाज के मेधावी छात्र छात्राओं का सम्मान किया। इस दौरान रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल, विधायक बिल्हा श्री धरम लाल कौशिक, पूर्व विधायक श्री शिवरतन शर्मा, सुश्री पिंकी ध्रुव, श्री लच्छूराम कश्यप, समाज प्रमुख श्री बंशीलाल नेताम, कलेक्टर श्री दीपक सोनी, पुलिस अधीक्षक श्री विजय अग्रवाल उपस्थित रहे। समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने जनजातीय गौरव की भावना को सुदृढ़ बनाने के लिए हर साल 15 नवम्बर को जनजातीय गौरव दिवस की शुरुआत की। इसके साथ ही रानी दुर्गावती का भव्य स्मारक जबलपुर में तैयार कराया गया है। देश की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जनजातीय समाज से हैं। उनका इस सर्वोच्च पद में आसीन होना जनजातीय समाज के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने कहा कि समाज एकजुट होकर और शिक्षा प्राप्त कर आगे बढ़े। शिक्षा विकास का मूलमंत्र है। किसी भी क्षेत्र में तरक्की करना है, तो शिक्षा जरुरी है। उन्होंने युवाओं को नशापान से दूर रहने की नसीहत देते हुए कहा कि नशापान से युवा गुमराह हो रहे हैं।

# उप मुख्यमंत्री ने सभी नगरीय निकायों में प्री-ऑडिट के दिए निर्देश

### चालू वित्तीय वर्ष के प्री-ऑडिट के साथ ही पिछले चार वर्षों की लंबित अवधि का भी होगा पोस्ट ऑडिट

**रायपुर( समय दर्शन )।** उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने नगरीय निकायों में वित्तीय अनुशासन में कसावट लाने सभी आय एवं व्ययों के प्री-ऑडिट के निर्देश दिए हैं। उन्होंने पिछली सरकार द्वारा ऑडिट प्रक्रिया बंद कर दिए जाने के कारण ऑडिट से रह गए विगत चार वर्षों की नस्तियों के पोस्ट ऑडिट कराने के भी निर्देश दिए हैं। उन्होंने प्रदेश की सभी 184 नगरीय निकायों के साथ ही नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के यांत्रिकी प्रकोष्ठ तथा राज्य शहरी विकास अभिकरण (स्ड्ढ) का भी ऑडिट कराने को कहा है। उप मुख्यमंत्री साव ने नगरीय निकायों में कड़े वित्तीय अनुशासन के लिए प्री-अंकेक्षण-सह-आंतरिक अंकेक्षण की प्रक्रिया को पुन: प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। उनके निर्देश पर सभी 184 नगरीय निकायों तथा दो राज्य कार्यालयों, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के यांत्रिकी प्रकोष्ठ और सूडा को भी प्री-अंकेक्षण-सह-आंतरिक अंकेक्षण एवं वैधानिक दायित्व के परिपालन के दायरे में लाते हुए सूडा द्वारा कार्ययोजना तैयार की जा रही है। उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने प्री-अंकेक्षण-सह-आंतरिक अंकेक्षण की जरूरत को रेखांकित करते हुए कहा कि नगरीय निकायों में अंकेक्षण प्रारंभ होने से सभी भुगतान नस्तियों का परीक्षण प्री-ऑडिट के माध्यम से सीए फर्म द्वारा किया जाएगा। इससे भुगतान संबंधी सभी नियमों का परिपालन सुनिश्चित होगा। उन्होंने कहा कि अंकेक्षण प्रारंभ होने के बाद पूर्ववर्ती सरकार द्वारा ऑडिट बंद किए जाने के बाद की समस्त नस्तियों का नवीन सीए फर्म की नियुक्ति के बाद पोस्ट ऑडिट कराया जाएगा। उल्लेखनीय है कि नगरीय निकायों में वित्तीय अनुशासन की अनिवार्यता एवं महत्ता को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ में प्रथम बार प्री-अंकेक्षण-सह-आंतरिक अंकेक्षण का कार्य वर्ष 2015-16 से प्रारंभ किया गया था। नगर पालिक निगम अधिनियम-1956, नगर पालिका अधिनियम-1961 एवं संबंधित नियम, कार्य विभाग मैन्युअल, भण्डार क्रय नियम तथा राज्य शासन द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों का पालन सुनिश्चित करने नगरीय प्रशासन विभाग द्वारा संबंधित क्षेत्रीय कार्यालय के अंतर्गत आने वाले निकायों में आंतरिक अंकेक्षण के लिए पांच समूहों में पृथक-पृथक अनुभवी चार्टर्ड एकाउन्टेंट एजेंसीज (ष्ट स्नद्बह्म्द्वह्य) को आंतरिक अंकेक्षक नियुक्त किया गया था।

# भ्रष्टाचार-कमीशनखोरी बन गई है भाजपा सरकार की पहचान: दीपक बैज

**रायपुर( समय दर्शन )।** प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी साय सरकार की पहचान बन गयी है। बिना कमीशन के प्रदेश में किसी विभाग में कोई काम नहीं हो सकता। आबकारी, पीएचई, कृषि सभी विभागों में कमीशन के टारगेट फिक्स हो गये है। अब तो लोग साय सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ लामबंद हो रहे है। आबकारी विभाग में अधिकारी दुकानों को कमीशन का टार्गेट दे रहे है, इसका वीडियो वायरल हो रहा है। राजनांदगांव के कांट्रेक्टर एसोसिएशन के द्वारा जल जीवन मिशन योजना में ठेकेदारों को भुगतान के एवज में पीएचई विभाग के ईई और एसडीओ द्वारा 10 प्रतिशत की कमीशन मांगे जाने की लिखित शिकायत विगत 2 अप्रैल 2024 को जल जीवन मिशन के प्रदेश संचालक से की है। डेढ़ महीने से अधिक समय बीत जाने के बावजूद भी छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार ने उक्त शिकायत पर अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं किया है। मुख्यमंत्री और भारतीय जनता पार्टी के मंत्रियों का मौन इस बात का प्रमाण है कि भाजपा सरकार की सहमति और संरक्षण में ही लूट का यह खेल खेला जा रहा है। कांट्रेक्टर एसोसिएशन ने अपने शिकायत पत्र में यह भी कहा है कि ईई और एसडीओ के द्वारा यह बताया गया है उनके द्वारा लिए जाने वाला कमीशन ऊपर वालों के लिए है। मुख्यमंत्री साय यह स्पष्ट करें, कि क्या यह कमीशन छत्तीसगढ़ को रिमोट से चलाने वाले मोदी और शाह तक पहुंचाया जा रहा है? दीपक बैज ने कहा कि आबकारी और जल जीवन मिशन में अधिकारियों की कमीशनखोरी का खुलासा साय सरकार का आईना है। भाजपा नेताओं का पूरा फोकस केवल कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार में है। छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार आते ही केंद्र और राज्य सरकार की तमाम योजनाओं में जमकर वसूली शुरु हो गई है। तमाम विभाग ठेके पर संचालित किये जा रहे हैं। पूरा कमीशन का भुगतान नहीं होने पर अधिकारियों पर दबाव बनाकर बिल पर साइन करने से रोका जा रहा है।

# बृजमोहन मॉब लिंचिंग के अपराधियों को बचाने बयान दे रहे : कांग्रेस

**रायपुर( समय दर्शन )।** भाजपा सांसद बृजमोहन अग्रवाल द्वारा माब लिचिंग में हुई हत्या को आत्महत्या बताये जाने की कांग्रेस ने कड़ी निंदा की है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा सांसद बृजमोहन अग्रवाल का बयान हत्यारों को संरक्षण देने वाला है। बृजमोहन जैसे वरिष्ठ राजनेता से इस प्रकार के बयान की अपेक्षा सभ्य समाज कदापि नहीं करता हैं। माब लिचिंग छत्तीसगढ़ के माथे पर कलंक है। इस घटना के आरोपियो पर हत्या का मुकदमा दर्ज कर सख्त कार्यवाही होनी चाहिये, न कि बयानबाजी कर अपराधियों को संरक्षण दिया जाये। सुशील आनंद शुक्ला ने कहा की इस घटना में एक दर्जन से अधिक अराजक तत्वों ने पीट-पीट कर तीन लोगो की हत्या कर दिया है। दहशत गर्दो ने सरेआम कुछ लोगों पर लाठियों डंडो और धारदार हथियार से हमला बोला था जिनमे तीन की जान गयी। इस गंभीर आपराधिक मामले में पुलिस द्वारा अपराधियों के खिलाफ हत्या को मुकदमा 302 के तहत दर्ज करने के बजाय सदोष मानव बध का मुकदमा दर्ज किया गया है। यह मामला हत्या का है सरकार हल्की धाराओं में कार्यवाही कर दहशत गर्दो को संरक्षण दे रही है। सांसद अपराधियों को बचाने गलतबयानी कर रहे है। उन्होंने कहा कि सत्तारूढ़ दल के लोगों के संरक्षण में अराजक तत्व बेलगाम हो गये है। अपराधियों के हौसले बढ़ गये है। माब लिंचिंग से तीन लोगों की मौत राज्य के माथे पर कलंक का टीका है। इस प्रकार का गिरोह बनाकर कानून को हाथ में लेने का दुस्साहस ऐसे लोगों के पास कहां से आया? सरकार को इसका जवाब देना चाहिये।

## 'नेक्स्ट्रा बाय एयरटेल', 'आरई100' में शामिल हुई, 100त्न नवीकरणीय ऊर्जा डेटा केंद्र कंपनी बनने के लिए प्रतिबद्ध है

**गुरुग्राम ( भारत ):** भारत की अग्रणी डेटा सेंटर कंपनियों में से एक, 'नेक्स्ट्रा बाय एयरटेल', 'आरई100' पहल में शामिल हो गई है - जो कार्बन डिस्क्लोज़र प्रोजेक्ट (सीडीपी) के साथ साझेदारी में क्लाइमेट ग्रुप के नेतृत्व वाली एक प्रमुख वैश्विक पहल है — और इसने बिजली की 100त्न आपूर्ति नवीकरणीय स्रोतों से प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है। इसके साथ, नेक्स्ट्रा भारत का एकमात्र डेटा सेंटर संगठन बन गया है, जिसने 'आरई100' के समक्ष पर्यावरणीय सस्टेनिबिलिटी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और 2031 तक कार्बन उत्सर्जन के मामले में नेट-जीरो बनने का लक्ष्य प्राप्त करने का वचन दिया, और 'आरई100' को ऐसा वचन देने वाली 14वीं भारतीय कंपनी बनने की उपलब्धि हासिल की है। कंपनी ने अपने कार्य संचालनों में नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाए जाने में काफी वृद्धि की है और अब तक 422,000 मेगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा के लिए अनुबंध किया है। वित्त वर्ष 2023-24 में, नेक्स्ट्रा ने पावर परचेज एग्रीमेंट्स और कैप्टिव सोलर रूफ्टॉप प्लांट्स के माध्यम से नवीकरणीय स्रोतों से ऊर्जा की आपूर्ति प्राप्त करके 9 156,595 $tCO_2e$ उत्सर्जन करने से खुद को बचाया। आशीष अरोड़ा, सीईओ — 'नेक्स्ट्रा बाय एयरटेल' ने कहा, हम पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार ब्रांड हैं और स्वच्छ ऊर्जा विकल्पों को तेजी से अपना रहे हैं। हम 2031 तक कार्बन उत्सर्जन के मामले में नेट-जीरो बनने के लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में मजबूत कदम उठाते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

कोलकाता में भारत जकात संतर पथुआ गौंटा के सदस्य 170वें हूल दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित रैली में हिस्सा लेते हुए.

## सोनी इंडिया की शानदार ब्रेविया 7 मिनी एलईडी सीरीज़ के साथ घर में लें सिनेमा का आनंद

**नई दिल्ली:** सोनी इंडिया ने आज नई ब्रेविया 7 सीरीज़ के लॉन्च की घोषणा की, जो अपने उन्नत फीचर्स और अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के साथ बेजोड़ ऑडियो और विज़ुअल अनुभव प्रदान करती है। यह सीरीज़ सिनेमैटिक कंटेंट में वास्तविकता के अहसास को और बढ़ाती है और घर पर बेहतरीन पिक्चर और साउंड क्वालिटी प्रदान करती है, जिससे दर्शक बड़ी स्क्रीन के जादू के साथ फिल्मों का आनंद ले सकते हैं। ब्रेविया 7 सीरीज़ में शानदार कॉग्निटिव प्रोसेसर एक्सआर, मिनी एलईडी और एक्सआर ट्रिलुमिनोस प्रो टेक्नोलॉजी का मेल है ताकि जीवंत दृश्य और इमर्सिव साउंड प्रदान किया जा सके। इस सीरीज़ में गूगल टीवी इंटीग्रेशन और सोनी पिक्चर्स कोर (जो पहले ब्रेविया कोर था) जैसे स्मार्ट फीचर भी शामिल हैं, जो उपभोक्ताओं को मनोरंजन का शानदार अनुभव प्रदान करते हैं। सोनी अपने ब्रेविया ब्रांड को बेहतरीन होम सिनेमा अनुभव प्रदान करने के लिए नया स्वरूप दे रही है और स्ट्रीमिंग सेवाओं के विस्तार के मद्देनज़र घर पर फिल्में देखने के बढ़ते रुझान का लाभ उठा रही है। डिजिटल सिनेमा कैमरे, पेशेवर मॉनिटर और हेडफोन सहित अपने व्यापक उत्पाद लाइनअप के मद्देनज़र सोनी को सिनेमा उद्योग और फिल्म निर्माताओं के रचनात्मक इरादों की गहरी समझ है।

# नये कृषि स्टार्टअप स्थापित करने के लिए आगे आएं कृषि विज्ञान केन्द्र: डॉ. चंदेल

### छत्तीसगढ़-मध्यप्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों की तीन दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न



**रायपुर( समय दर्शन )।** इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-9, जबलपुर के अन्तर्गत आने वाले मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के 81 कृषि विज्ञान केन्द्रों की तीन दिवसीय 31वीं क्षेत्रीय कार्यशाला का रविवार को समापन हुआ। 28 से 30 जून तक आयोजित इस कार्यशाला के समापन समारोह के मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. (कर्नल) गिरीश चंदेल थे। समापन समारोह की अध्यक्षता कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-9, जबलपुर के निदेशक डॉ. एस.आर.के. सिंह ने की। इस तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला में मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा विगत वर्ष किये गये कार्यों का प्रस्तुतीकरण दिया गया तथा आगामी वर्ष की कार्ययोजना पर विचार विमर्श किया गया। समापन समारोह के संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. गिरीश चंदेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्र नवीन अनुसंधान एवं तकनीकों को किसानों तक पहुंचा कर उनकी आय बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्रों को बाजार आधारित कृषि व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए किसानों के लिए नये स्टार्टअप शुरू करने तथा कृषक उत्पादक संगठन गठित करने हेतु आगे आना चाहिए। समापन समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले कृषि विज्ञान केन्द्रों को सम्मानित भी किया गया। तीन दिवसीय कार्यशाला के दौरान भारतीय कृषि अर्थ व्यवस्था कृषि विकास योजनाओं, रोजगार मूलक उपादान, पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता संरक्षण, कृषि विपणन व्यवस्था तथा स्टार्टअप आदि में कृषि विज्ञान केन्द्रों की भूमिका के संबंध में विभिन्न तकनीकी सत्र आयोजित किये गये तथा इन विषयों पर सार्थक विचार-विमर्श किया गया। कार्यशाला स्थल पर विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा लगाई गई कृषि प्रदर्शनी हेतु छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों को पुरस्कृत किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र बिलासपुर को सर्वश्रेष्ठ विषय वस्तु प्रदर्शन हेतु सम्मानित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, बेमेतरा, जाजगीर-चांपा, रायगढ़, रायपुर, दुर्ग (पाहंदा), कांकेर, नरायणपुर, सरगुजा, मैनपाट, बलरामपुर, रतलाम, नीमच, झाबुआ, मंदसौर, छिंदवाड़ा-2, सागर-2 कृषि विज्ञान केन्द्रों को उत्कृष्ट प्रदर्शनी स्टॉल लगाने हेतु सम्मानित किया गया। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के निदेशक विस्तार सेवाएं डॉ. अजय वर्मा ने छत्तीसगढ़ के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा संचालित कृषि विकास गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कृषि विज्ञान केन्द्र, दुर्ग (पाहंदा) के प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विजय जैन ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कृषि विज्ञान केन्द्र बिलासपुर के प्रमुख डॉ. अरूण त्रिपाठी ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस कार्यशाला में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के एवं विभिन्न संस्थानों के निदेशक, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, राजमाता विजया राजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के निदेशक विस्तार सेवाएं तथा छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के अंतर्गत कार्यरत 81 कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रमुख एवं वैज्ञानिक शामिल हुए।

# संपादकीय

## सख्त कानून लागू

सरकार ने पब्लिक एग्जामिनेशन (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट, 2024 लागू कर दिया है। इस एंटी-पेपर लीक कानून के तहत पेपर लीक या उत्तर-पुस्तिका से छेड़छाड़ करने पर कम से कम तीन साल की सजा होगी जिसे दस लाख तक के जुर्माने के साथ बढ़ा कर पांच साल तक भी किया जा सकता है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू चार महीने पहले ही लोक परीक्षा (अनुचित साधनों का निवारण) विधेयक, 2024 को मंजूरी दे चुकी थीं। इस कानून का उद्देश्य यूपीएससी, एसएससी, रेलवे, बैंकिंग भर्ती परीक्षाओं और एनटीए द्वारा आयोजित अन्य तमाम परीक्षाओं में अनुचित साधनों के प्रयोग को रोकना है। इस तरह के संगठित अपराध में शामिल लोगों पर अब न्यूनतम एक करोड़ रुपये के जुर्माने का प्रावधान है। इस कानून से पहले राज्यों में नकल रोकने और परीक्षा में किसी भी तरह की धांधली को रोकने संबंधी कानून बनाए गए हैं। ओडिशा, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात और उत्तराखंड में ऐसे कानून हैं। हालांकि ये उस तरह के नतीजे देने में असफल रहे हैं, जिनके बलबूते परीक्षाओं को पारदर्शी बनाया जा सके। इस नये कानून द्वारा परीक्षा आयोजित करने वाली संस्था के प्रमुख और सदस्यों को लोक सेवक माना जाएगा ताकि उनके खिलाफ अपराध के साथ ही भ्रष्टाचार का मामला भी चलाया जा सके। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं पर उठने वाली उंगलियों के कारण युवाओं का भरोसा लगातार टूट रहा है। बार-बार परीक्षा प्रणालियों पर संदेह और उनकी पारदर्शिता धूमिल पड़ने के चलते प्रतियोगियों में निराशा व्याप्त होती जा रही है। चूंकि अब यह संज्ञेय और गैर-जमानती अपराध की श्रेणी में आ गया है, इसलिए कोई भी पुलिस अधिकारी बगैर वारंट भी अपराधी को गिरफ्तार कर सकता है। भले ही यह फैसला लेने में सरकार ने काफी ढिलाई बरती है लेकिन देर आयद दुरुस्त आयद क्योंकि उच्च शिक्षा या नौकरी के लिए परीक्षार्थियों का समूचा भविष्य ही दांव पर लगा होता है। परीक्षाओं में धांधली होनहार युवाओं को नैतिक तौर पर बुरी तरह तोड़ देती है। हालांकि सख्त कानून बनाने में वक्त लगता है। विशेषज्ञों की राय और विभिन्न दृष्टिकोणों से इसे उस सख्ती से लागू किया गया ताकि भविष्य में इस तरह का कोई संकट ही न खड़ा हो सके। साथ ही, इस तरह के अपराधियों पर लगाम कसी जा सके। देखा जाना है कि कानून सख्त किए जाने के बाद पेपर लीक और परीक्षाओं में धांधलियों पर नकेल कसने में हम किसने सफल होते हैं।

## क्या आपातकाल भूल गए?

25 जून, 1975 यह तारीख 50वें साल में प्रवेश कर चुकी है। पुरानी है, लेकिन आज भी प्रासंगिक है। यह तारीख कभी भूली नहीं जा सकती, क्योंकि संविधान और लोकतंत्र विरोधी थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश पर आपातकाल थोप दिया था। न्यायपालिका और मीडिया तक को 'बंधक' बना लिया गया था। भारतीय प्रेस परिषद पर ताले जड़ दिए गए थे और स्वायत्त संस्थानों की स्वतंत्रता छीन ली गई थी। वही अखबार छप पाते थे, जिनकी एक-एक खबर पढ़ कर, सेंसर होकर, सूचना मंत्रालय अनुमति देता था। एक लाख से अधिक विपक्षी नेताओं, पत्रकारों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों को जबरन जेल में ठूंस दिया गया था। जमानत की कोई व्यवस्था नहीं थी। उन्होंने क्या अपराध किया था? वह लोकतांत्रिक कार्रवाई थी या तानाशाही आदेश थे? देश के खिलाफ न तो कोई युद्ध छेड़ा गया था और न ही बाहरी-आंतरिक गड़बडिय़ां थीं। विरोध करना तो प्रतिपक्ष का लोकतांत्रिक अधिकार था। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के चुनाव को एक अदालत ने 'अवैध' करार दिया था, लिहाजा वह चुनाव हार गई थीं। अदालत ने उन्हें छह साल के लिए चुनाव लडऩे को 'अयोग्य' भी घोषित कर दिया था। तत्कालीन तानाशाह प्रधानमंत्री ने सोचा होगा कि अदालत उनके खिलाफ ऐसा फैसला कैसे दे सकती है। आपसी विमर्श हुआ। तत्कालीन पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सिद्धार्थ शंकर रे ने सुझाव दिया कि अनुच्छेद 352 के तहत देश में आपातकाल लागू कर दिया जाए। नतीजतन अध्यादेश लेकर इंदिरा गांधी और सिद्धार्थ तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद के पास गए। रात्रि करीब 11.30 बजे राष्ट्रपति ने अध्यादेश पर हस्ताक्षर किए। उसे इतना गोपनीय रखा गया कि किसी भी कैबिनेट मंत्री को भनक तक नहीं लगी। अगले दिन 26 जून की सुबह कैबिनेट बैठक प्रधानमंत्री ने बुलाई और मंत्रियों को आपातकाल के बारे में खुलासा किया। अचानक ऐसी खबर सुनकर सभी मंत्री भौंचक और स्तब्ध थे, लेकिन क्या कर सकते थे, क्योंकि वे सत्ता के कांग्रेसी गुलाम थे। बहरहाल प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सुबह सात बजे ही आकाशवाणी पर घोषणा की, तो संविधान और लोकतंत्र पर 'काला धब्बा' छाप दिया गया। स्वतंत्र भारत में उस 'काले, तानाशाह दिन' का इतिहास भूला नहीं जा सकता। आज संसद भवन में इंदिरा गांधी की बहू सोनिया गांधी और पौत्र राहुल गांधी ने, विपक्षी नेताओं के संग, संविधान-पुस्तिका की प्रति लहराते हुए प्रदर्शन किया। उन्होंने खुद को 'संविधान का रक्षक' और प्रधानमंत्री मोदी को 'तानाशाह' करार दिया। कांग्रेस समेत 'इंडिया' गठबंधन ने इस छद्म नेरेटिव पर पूरा चुनाव लड़ा था कि मोदी सरकार वापस आई, तो संविधान बदल दिया जाएगा। लोकतंत्र खत्म हो जाएगा। बहरहाल चुनाव सम्पन्न हो चुके हैं। देश ने विभाजित जनादेश दिया है, लेकिन गठबंधन के बहुमत के आधार पर मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बन चुके हैं। उनके सभी प्रमुख मंत्री जीत कर दोबारा मंत्री भी बन चुके हैं। संसद में 18वीं लोकसभा का पहला दिन, पहला सत्र शुरू हुआ। नवनिर्वाचित सांसदों ने शपथ ली, लेकिन कांग्रेस समेत विपक्षी सांसद संविधान-पुस्तिका की प्रति लेकर संसद परिसर में आए। राहुल गांधी ने कहा कि कोई भी ताकत संविधान को छू नहीं सकती। सदन के भीतर जब प्रधानमंत्री सांसद के तौर पर शपथ लेने जा रहे थे, तो विपक्षी सीटों से संविधान की प्रति लहराई जा रही थी। मकसद और संकेत स्पष्ट थे। यह भी साफ हो गया कि विपक्ष आक्रामक रहेगा और सदन में हंगामा, अवरोध, नारेबाजी का माहौल रहेगा। विपक्ष सार्थक, सकारात्मक, जिम्मेदार भूमिका निभाने को बिल्कुल भी तैयार नहीं लगता। कमोबेश अब चुनाव के मुद्दे और मुद्रा छोड़ देने चाहिए। अब जनता ने ठोस और राष्ट्रहित कामों के लिए जनादेश दिया है, लिहाजा संसद के भीतर वही भूमिका होनी चाहिए, लेकिन विपक्ष अब भी झूठे नेरेटिव पर राजनीति करना चाहता है।

# पेड़ बचाओ-पेड़ लगाओ

**विनीत नारायण**

पूरी दुनिया भीषण गर्मी से झुलस रही है। हजारों लोग गर्मी की मार से बेहाल हो कर मर चुके हैं। दुनिया के हर कोने से एक ही आवाज उठ रही है, कि पेड़ बचाओ-पेड़ लगाओ। क्योंकि पेड़ ही गर्मी की मार से बचा सकते हैं।

ये हवा में नमी को बढ़ाते हैं और मेघों को आकर्षित करते हैं, जिससे वष्रा होती है। आप दो करोड़ की कार को जब पार्किंग में खड़ा करते हैं तो किसी पेड़ की छांव ढूंढ़ते हैं। क्योंकि बिना छांव के खड़ी आपकी कार दस मिनट में भट्टी की तरह तपने लगती है। इस बार हज में जो एक हजार से ज्यादा लोग अब तक गर्मी से मरे हैं, वे शायद न मरते अगर उन्हें पेड़ों की छाया नसीब हो जाती।

चलो वहां तो रेगिस्तान है पर भारत तो सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम, शस्यश्यामलाम वाला देश है जिसका वर्णन हमारे शास्त्रों, साहित्य और इतिहास में ही नहीं चित्रकारी और मूर्तिकला में भी परिलक्षित होता है। पर दुर्भाग्य देखिए कि आज भारत भूमि तेजी से वृक्षविहीन हो रही है। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि तमाम प्रयासों के बावजूद भारत का हरित आवरण भूभाग का कुल 24.56 प्रतिशत ही है। ये सरकारी आंकड़े हैं, जमीनी हकीकत आप खुद जानते हैं। अगर हवाई जहाज से आप भारत के ऊपर उड़ें तो आपको सैकड़ों मीलों तक धूल भरी आंधियां और सूखी जमीन नजर आती है। पर्यावरण की दृष्टि से कुल भूभाग का 34 फीसद अगर हरित आवरण हो तो हमारा जीवन सुरक्षित रह सकता है।

भवन निर्माताओं की अंधी दौड़, बढ़ता शहरीकरण और औद्योगीकरण, आधारभूत ढांचे को विकसित करने के लिए बड़ी-बड़ी परियोजनाएं, जंगलों के कटान के लिए जिम्मेदार हैं। मानवशास्त्र विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि पर्यावरण की सुरक्षा का सबसे बड़ा काम जनजातीय लोग करते हैं। वे कभी गीले पेड़ नहीं काटते, हमेशा सूखी लकड़ियां ही चुनते हैं। वृक्षों की पूजा करते हैं। पर जब खान

माफिया या बड़ी परियोजना की गिद्धदृष्टि वनों पर पड़ती है तो वन ही नहीं, वन्य जीवन भी कुछ महीनों में नष्ट हो जाता है। पर्यावरण की रक्षा के लिए बने कानून और अदालतें केवल कागजों पर दिखाई देते हैं। सनातन धर्म सदा से प्रकृति की पूजा करता आया है। चिंता की बात यह है कि आज सनातन धर्म के नाम पर ही पर्यावरण का विनाश हो रहा है। समाचार पत्रों से सूचना मिली है कि कांवड़ियों के लिए पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक विशिष्ट मार्ग का निर्माण किया जाना है, जिसके लिए 33 हजार वृक्षों को काटा जाएगा। इससे पर्यावरणवादियों को ही नहीं, आम जन को भी बहुत चिंता है।

दरअसल, उत्तर प्रदेश सरकार ने राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) को सूचित किया है कि गाजियाबाद, मेरठ और मुजफ्फरनगर में फैली 111 किलोमीटर लंबी कांवड़ मार्ग परियोजना के लिए 33 हजार से अधिक पूर्ण विकसित पेड़ों और लगभग 80 हजार पौधों को काटा जाएगा। गौरतलब है कि इस परियोजना में 10 बड़े पुल, 27 छोटे पुल और एक रेलवे ओवरब्रिज का निर्माण शामिल है और इस परियोजना की लागत 658 करोड़ रु पये होगी। सोचने वाली बात है कि इतनी बड़ी संख्या में पेड़ों को काटने की योजना ऐसे समय में आई है जब भारत के कई राज्य कई हफ्तों से भीषण गर्मी की चपेट में हैं। भीषण तापमान ने 200 से अधिक लोगों की जान ले ली है।

उल्लेखनीय है कि केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा पहले यूपी सरकार को तीन जिलों में परियोजना के लिए कुल 1,10,000 पेड़-पौधों को काटने की अनुमति देने के बाद नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने मामले का स्वत: संज्ञान लिया है। इस मामले की अगली सुनवाई जुलाई, 2024 के लिए निर्धारित की गई है और एनजीटी ने यूपी सरकार से परियोजना का विस्तृत विवरण मांगा है, जिसमें काटे जाने वाले पेड़ों का विवरण भी शामिल है। हजारों पेड़ों की इस कदर निर्मम कटाई से क्षेत्र की पारिस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। तापमान में वृद्धि जारी रहेगी, बारिश का पैटर्न भी बाधित होगा और हवा और भी जहरीली हो जाएगी। हमें विकास और पारिस्थितिक संरक्षण के बीच संतुलन बनाना होगा। परियोजना की पर्यावरणीय लागत की भरपाई के लिए यूपी सरकार ने ललितपुर जिले में वनीकरण के लिए 222 हेक्टेयर भूमि की चिन्हित की है, जो इस क्षेत्र से, जहां से पेड़ काटे जाएंगे काफी दूर है। क्या यह वनीकरण, कांवड़ यात्रा मार्ग पर शुरू होने जा रही परियोजना की लागत के अनुरूप मुआवजा होगा?

कुछ वन्य प्रेमी संस्थाओं ने इसका विरोध करते हुए एक ऑनलाइन याचिका भी दायर की है, जिसे हजारों लोगों का समर्थन मिल रहा है। पुरानी कहावत है कि विज्ञान की हर प्रगति प्रकृति के सामने बौनी होती है। प्रकृति एक सीमा तक मानव के अत्याचारों को सहती है पर जब उसकी सहनशीलता का अतिक्रमण हो जाता है तो वह अपना रौद्र रूप दिखा देती है। 2013 में केदारनाथ में बादल फटने के बाद उत्तराखंड में हुई भयावह तबाही और जान-माल की हानि से प्रदेश और देश की सरकार ने कुछ नहीं सीखा। आज भी वहां और अन्य प्रांतों के पहाड़ों पर तबाही का तांडव जारी है। चिंता की बात यह है कि हमारे नीति निर्धारक और सत्ताधीश इन त्रासदियों के बाद भी पहाड़ों पर इस तरह के विनाशकारी निर्माण को पूरी तरह प्रतिबंधित करने को तैयार नहीं हैं। वे आज भी समस्या के समाधान के लिए जांच समितियां या अध्ययन दल गठन करने से ही अपने कर्तव्य की पूर्ति मान लेते हैं। परिणाम होता है ढाक के वही तीन पात। खमियाजा भुगतना पड़ता है देश की जनता और देश के पर्यावरण को।

हाल के हफ्तों में और उससे पहले उत्तराखंड की तबाही के दिल दहलाने वाले वीडियो टीवी समाचारों में देख कर आप और हम भले ही कांप उठे हों पर शायद सत्ताधीशों की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ता। अगर पड़ता है तो वे अपनी सोच और नीतियों में आमूलचूल परिवर्तन कर भारत माता के मुकुट स्वरूप हिमालय पर्वत श्रृंखला पर विकास के नाम पर चल रहे इस दानवीय विनाश को अविलंब रोकें।

# नशे से दूरी के लिए फिटनेस है जरूरी

**भूपिंदर सिंह**

किसी भी सभ्यता या देश को इतनी क्षति युद्ध या महामारी से नहीं होती है जितनी तबाही नशे के कारण हो सकती है। आज जब देश के अन्य राज्यों सहित हिमाचल प्रदेश में भी नशा युवा वर्ग पर ही नहीं किशोरों तक चरस, अफीम, स्मैक, नशीली दवाओं तथा दूरसंचार के माध्यमों के दुरुपयोग से शिकंजा कस रहा है, इसलिए सरकार, स्कूलों व अभिभावकों को इस विषय पर सचेत हो जाना चाहिए। यदि विद्यार्थी किशोरावस्था में नशे से बच जाता है, तो वह फिर युवावस्था आते-आते समझदार हो गया होता है। इसलिए विद्यालय स्तर पर माध्यमिक से वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न विधाओं में व्यस्त रखने के साथ साथ शारीरिक फिटनेस की तरफ मोडऩा बेहद जरूरी हो जाता है। मानव का सर्वांगीण विकास शिक्षा के बिना अधूरा है। शिक्षा की परिभाषा में साफ-साफ लिखा है कि यहां शारीरिक व मानसिक, दोनों तरह से बराबर विद्यार्थियों का विकास करना है, जिससे वह आगे चलकर जीवन को सफलतापूर्वक खुशहाल जी सके। शारीरिक विकास के लिए खेलों के माध्यम से फिटनेस कार्यक्रम बहुत जरूरी हो जाता है। खेल ही वह माध्यम है जिसके द्वारा विद्यार्थी को नशे से दूर रखा जा सकता है। पड़ोसी राज्य पंजाब एक समय तरक्की में देश का अग्रणी राज्य था। इस सबके पीछे कारण तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों की दूरगामी सोच थी। खेलों में उत्कृष्टता उस प्रदेश की तरक्की व खुशहाली का भी पैमाना होती है। पंजाब में हजारों प्रशिक्षक विभिन्न खेलों में खेल प्रशिक्षण के लिए नियुक्त होने के साथ साथ खेल प्रशिक्षण के लिए आधारभूत ढांचा होना वहां के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का प्रमुख कारण रहा था।

बाद में जब पंजाब धीरे धीरे खेलों से दूर हुआ तो पहले वहां आतंकवाद और फिर आजकल पंजाब नशे का अड्डा बना हुआ है। यही कारण है कि हर क्षेत्र में आज हरियाणा पंजाब से काफी आगे निकल गया है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने एशियाई, राष्ट्रमंडल व ओलंपिक खेलों में पदक विजेता होने पर खिलाडिय़ों को करोड़ों रुपए के नगद ईनाम व सम्मानजनक नौकरी देकर हरियाणा में खेलों के लिए बहुत ही उपयुक्त वातावरण तैयार किया है। उसी का नतीजा है कि आज हरियाणा का हर किशोर व युवा किसी न किसी खेल के मैदान में नजर आता है। नब्बे के दशक चलते ही हिमाचल प्रदेश में खेलों के लिए तत्कालीन खेल मंत्री रामलाल ठाकुर ने शुरुआती दौर में अच्छा कार्य किया था। प्रेम कुमार धूमल ने राज्य में अंतरराष्ट्रीय खेल ढांचा, सरकारी नौकरियों में तीन प्रतिशत आरक्षण तथा प्रशिक्षकों की नियुक्ति करके खेलों को गति दी। जयराम सरकार में पहले गोविंद ठाकुर व बाद में राकेश पठानिया ने खेल मंत्री रहते हुए नई खेल नीति दी जिसमें काफी आकर्षक नगद ईनाम रखे हैं। अब सुक्खू सरकार ने कुछ ईनामों में और सम्मानजनक बढ़ोतरी कर दी है। अच्छा होता राज्य प्रशिक्षक भी भर्ती होते क्योंकि खिलाड़ी तो प्रशिक्षक ही बनाएगा। जब लाखों बच्चों के लिए फिटनेस कार्यक्रम बनेगा तो उसमें से ही फिट नागरिक प्रदेश को मिलेंगे। हिमाचल प्रदेश इस समय शिक्षा के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में गिना जाता है। पिछले कुछ दशकों से हिमाचल प्रदेश के नागरिकों की फिटनेस में बहुत कमी आई है। इसका प्रमुख कारण है विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के लिए किसी भी प्रकार के फिटनेस कार्यक्रम का न होना। रट्टे वाली पढ़ाई की होड़ में हम विद्यार्थियों की फिटनेस को ही भूल गए हैं। हिमाचल प्रदेश की अधिकांश आबादी गांव में रहती थी। वहां पर सवेरे शाम वर्षों पहले विद्यार्थी अपने अभिभावकों के साथ कृषि व अन्य घरेलू कार्यों में सहायता करता था। विद्यालय आने-जाने के लिए कई किलोमीटर दिन में पैदल चलता था। इसलिए उस समय के विद्यार्थी को किसी भी प्रकार के फिटनेस कार्यक्रम की कोई जरूरत नहीं थी। आज का विद्यार्थी घर के आंगन में बस पर सवार होकर विद्यालय के प्रांगण में उतरता है। पढ़ाई के नाम पर ज्यादा समय खर्च करने के कारण फिटनेस के लिए कोई समय नहीं बचता है। अधिकांश स्कूलों के पास फिटनेस के लिए न तो आधारभूत ढांचा है और न ही कोई कार्यक्रम है। आज का विद्यार्थी फिटनेस व मनोरंजन के नाम पर दूरसंचार माध्यमों का कमरे में बैठ कर खूब दुरुपयोग कर रहा है। ऐसे में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की बात मजाक लगती है। आज के विद्यार्थी के लिए विद्यालय या घर पर आधे घंटे के फिटनेस कार्यक्रम की सख्त जरूरत है। इसमें 15 से 20 मिनट धीरे-धीरे दौडऩा तथा विभिन्न कोणों पर शरीर के जोड़ों की विभिन्न क्रियाओं को पूरा करने के बाद शरीर को कूलडाउन करना होगा। कई मिनटों तक शारीरिक क्रियाओं के करने से रक्त वाहिकाओं में रक्त संचार तेज हो जाता है।

# मोदी गठबंधन पूर्व गठबंधन सरकारों से अलग

**अवधेश कुमार**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गठबंधन सरकार ने अपना काम शुरू कर दिया है । भारत में गठबंधन सरकारों के काम करने और उसके संचालन का अनुभव बहुत अच्छा नहीं रहा है। गठबंधन में सरकार का नेतृत्व करने वाले दल और नेता पर साथी दल अधिक से अधिक मंत्री बनाने और जिन्हें वो चाहते हैं उन्हें मंत्री के रूप में स्वीकार करने तथा बाद में अपने अनुसार नीतियां बनवाने या बदलवाने के लिए दबाव डालते रहें। अपनी बात न मानने पर समर्थन वापसी तथा सरकार के अस्थिर होने, गिर जाने, कमजोर हो जाने की घटनाएं भी हमने देखी हैं।

जानते और चाहते हुए भी कई बार प्रधानमंत्री को नीतियों के स्तर पर वैसे कदम उठाने से स्वयं को रोकना पड़ा या उठाए हुए कदम वापस लेने पड़े जो देश के लिए आवश्यक थे। डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार के दौरान ऐसी कई घटनाएं हुई। इसमें प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली वर्तमान गठबंधन सरकार को लेकर कोई आशंका उठती है तो उसे इस पृष्ठभूमि में तत्काल खारिज भी नहीं किया जा सकता। हालांकि विपक्ष इसे कमजोर व लंगड़ी सरकार बता रहा है, प्रधानमंत्री मोदी के बारे में यह टिप्पणी कर रहा है कि वे शेर से बकरी हो गए हैं तो उससे पूछा जाना चाहिए कि इसके समानांतर अगर सत्ता में वे आते तो उनकी सरकार कैसी होती? कम से कम इस सरकार में एक इतनी बड़ी पार्टी है जिसके आसपास भी कोई दल नहीं। राहुल गांधी जी के शब्दों में अगर यह क्रिपल्ड सरकार है तो 'इंडिया' की सरकार क्या ठोस चट्टान वाली होती?

कहने का तात्पर्य कि हमें आशंकाओं या विपक्ष की अतिवादी आलोचनाओं में जाने की जगह वास्तविकताओं के आधार पर इसके वर्तमान एवं भविष्य का आकलन करना चाहिए। इस प्रश्न का उत्तर तलाशना चाहिए कि आखिर अब मंत्रिमंडल गठन के बाद सरकार कैसे काम करेगी? सरकार की दिशा और दशा क्या होगी? यह बात सही है कि हमने

पिछले 10 वर्षों में ऐसी मोदी सरकार देखी है जिसके पास अपनी भाजपा का बहुमत था और ऐसे बड़े फैसले हुए, कदम उठाए गए, संवैधानिक-प्रशासनिक एवं नीतियों के स्तर पर ऐसे आमूल बदलाव के निर्णय हुए जिनकी पहले कल्पना नहीं थी। स्वयं सरकार को और देश को 10 वर्षों के इस अभ्यास से बाहर निकालना कठिन होगा, लेकिन क्या वाकई इससे बाहर निकालने की अभी ही आवश्यकता महसूस होती है या संभावना दिखाई देती है?

ध्यान रखिए कि पूर्व की गठबंधन सरकारों की तरह इस सरकार के गठन, मंत्रियों को सरकार में लेने या विभागों के बंटवारे में किसी तरह का खींचतान हमारे सामने नहीं आया। यह अन्य गठबंधन सरकारों से इसे अलग करता है। 72 सदस्यीय मंत्रिमंडल में साथी दलों के 11 मंत्रियों का होना ऐसी संख्या नहीं है जिसे लेकर इस आरोप को स्वीकार कर लिया जाए कि प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह पर साथी दलों का बहुत ज्यादा दबाव था। दूसरे, विभागों के बंटवारे में भी देखें तो जिन्हें जो मिला उसे लेकर कम से कम सार्वजनिक स्तर पर किसी ने भी अपना असंतोष प्रकट नहीं किया है। ज्यादातर का बयान यही है कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश को विश्व की शीर्ष शक्ति बनाने के लिए काम कर रहे हैं।

गठबंधन सरकारों में साथी दलों के नेता इस तरह बेहिचक प्रधानमंत्री का नाम नहीं लेते थे। तीसरे, इस सरकार की सबसे बड़ी विशेषता है, शीर्ष मंत्रालयों में फेरबदल न होना। आप देख लीजिए प्रधानमंत्री के बाद गृह मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, वित्त मंत्रालय , विदेश मंत्रालय यहां तक कि शिक्षा मंत्रालय, सड़क परिवहन मंत्रालय आदि उन्हीं वरिष्ठ मंत्रियों के हाथ में है। सरकार गठन के पहले मीडिया में साथी दलों द्वारा अलग-अलग मंत्रालयों के मांग की अटकलें आ रही थी, जिनमें बिहार द्वारा रेल मंत्रालय की मांग शामिल थी।

हालांकि इसकी कहीं से पुष्टि नहीं हुई। कहने का यह अर्थ नहीं कि साथी दलों की अपनी राजनीतिक आवश्यकताओं और महत्त्वाकांक्षाओं के अनुरूप चाहत नहीं होगी और उन्होंने प्रधानमंत्री या अन्य वरिष्ठ भाजपा नेताओं के समक्ष अपनी बात रखी ही नहीं होगी। आगे भी वह अपनी बात नहीं रखेंगे ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। मूल बात है जिद पर अड़ना और सरकार को मजबूर करके अपने अनुकूल निर्णय बदलवा लेना। उदाहरण के लिए यूपीए सरकार में तृणमूल कांग्रेस की ओर से रेल मंत्री बने दिनेश त्रिवेदी ने अपने बजट में यात्रियों का जैसे ही किराया बढ़ाया ममता बनर्जी बिफर गई। उन्होंने न केवल बजट में परिवर्तन करने बल्कि रेल मंत्रालय से हटाने का फरमान सुनाया और मनमोहन सरकार को ऐसा ही करना पड़ा। कम से कम वह स्थिति इस समय सरकार में नहीं दिख रही है।

इसी तरह किसी सरकार के नेतृत्वकर्ता की अपनी आभा, देश और काम के प्रति समर्पण तथा उसका दृष्टिकोण व लक्ष्य सबसे ज्यादा प्रभावकारी होता है। इस मायने में प्रधानमंत्री मोदी का नेतृत्व अन्य कई प्रधानमंत्रियों से अलग है। साथी दलों में जद (यू) और तेलुगू देशम पहले भी केंद्र और प्रदेश में साथ काम कर चुकी है। उन्हें पता है कि प्रधानमंत्री देश के लिए व्यापक विजन रखते हैं उसमें सभी राज्यों के विकास की उनकी कल्पना है। तो उन्हें नीतियों को लेकर कोई संभ्रम नहीं होगा।

वैसे, आमतौर पर गठबंधन सरकारों में यह मांग होती है कि कॉमन मिनिमम प्रोग्राम यानी समान न्यूनतम कार्यक्रम बनाकर आगे काम किया जाए। न राजग के नेताओं ने चुनाव में जाने के पहले ऐसी मांग की और न सरकार गठन के पूर्व। भाजपा को बहुमत न मिलने के बाद उनके पास इसका अवसर था और वैसा कर सकते थे। अगर उन्होंने मांग नहीं किया तो इसका अर्थ यही है कि पूर्व सरकार की ओर से जो एजेंडा रखा गया है उससे वह सहमत हैं। यह भी ध्यान रखिए कि भाजपा ने पिछले 10 सालों में अपने हिंदुत्व व राष्ट्रवाद संबंधी एजेंडा पर खुलकर काम किया है और शेष कार्यों के लिए उन्होंने घोषणाएं भी की है। इस समय भविष्य की तस्वीर के बारे में निश्चिंतता के साथ पूरी तरह भविष्य की तस्वीर बनाने की बजाय हमें थोड़ी प्रतीक्षा करनी चाहिए। हां , इतना अवश्य कहा जा सकता है कि पूर्व की गठबंधन सरकारों से वर्तमान मोदी गठबंधन सरकार अपने चरित्र, आंतरिक संरचना व सामूहिक मनोविज्ञान आदि के स्तर पर काफी हद तक अलग है।

## रोगमुक्त करती हैं मां शीतला

**वर्ष 2024 में शीतला अष्टमी का पर्व 29 जून, शनिवार को मनाया जा रहा है। आपाढ़ कृष्ण अष्टमी के दिन मनाया जाने वाला यह पर्व माता शीतला को समर्पित है। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार चैत्र, वैशाख, जेष्ठ और आषाढ़ महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को शीतला अष्टमी पूजन करने का प्रावधान है। इन चारों महीने के चार दिन का व्रत करने से शीतला जनित बीमारियों से छुटकारा मिलता है। इस पूजन में शीतल जल और बासी भोजन का भोग लगाने का विधान है। शीतला अष्टमी के दिन श्रद्धालु व्रत रखकर माता की भक्ति करके अपने परिवार की रक्षा करने के लिए माता से प्रार्थना करते हैं।**

### पूजा विधि

- शीतला अष्टमी के दिन अलसुबह जल्दी उठकर माता शीतला का ध्यान करें।
- इस दिन व्रती को प्रातः कर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ व शीतल जल से स्नान करना चाहिए।
- स्नान के पश्चात निम्न मंत्र से संकल्प लेना चाहिए-
  मम गेहे शीतलारोगजनितोपद्रव प्रशमन पूर्वकायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिये शीतलाष्टमी व्रतं करिष्ये
- संकल्प के पश्चात विधि-विधान तथा सुगंधयुक्त गंध व पुष्प आदि से माता शीतला का पूजन करें।
- इस दिन महिलाएं मीठे चावल, हल्दी, चने की दाल और लोटे में पानी लेकर पूजा करती हैं।
- पूजन का मंत्र- ह्रं श्रीं शीतलायै नमः का निरंतर उच्चारण करें।
- माता शीतला को जल अर्पित करें और उसकी कुछ बूंदे अपने ऊपर भी डालें।
- इसके पश्चात ठंडे भोजन का भोग मां शीतला को अर्पित करें।
- तत्पश्चात शीतला स्तोत्र का पाठ करें और कथा सुनें।
- रोगों को दूर करने वाली मां शीतला का वास वट वृक्ष में माना जाता है, अतः इस दिन वट पूजन भी भी करना चाहिए।
- शीतला माता की कथा पढ़ें तथा मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः का जाप करें।
- जो जल चढ़ाएं और चढ़ाने के बाद जो जल बहता है, उसमें से थोड़ा जल लोटे में डाल लें। यह जल पवित्र होता है। इसे घर के सभी सदस्य आंखों पर लगाएं।
- पूजन के पश्चात थोड़ा जल घर लाकर हर हिस्से में छिड़कने से घर की शुद्धि होती है।
- शीतला सप्तमी या अष्टमी व्रत का पालन जिस घर में किया जाता है, वहां सुख, शांति हमेशा बनी रहती है तथा रोगों से निजात भी मिलती है।

# क्यों रखा जाता है योगिनी एकादशी का व्रत

**योगिनी एकादशी व्रत आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष में रखा जाता है। इस दिन व्रत और भगवान विष्णु की पूजा करने से घर में सुख, समृद्धि और समृद्धि आती है। योगिनी एकदशी निर्जला एकदशी के बाद और देवशयनी एकदशी से पहले की जाती है।**

पूरे साल में 24 एकादशी और अधिकमास होने पर 26 एकादशी व्रत रखे जाते हैं। एकादशी व्रत और आषाढ़ का महीना दोनों भगवान विष्णु को अतिप्रिय है। इसीलिए आषाढ़ माह की एकादशी का विशेष महत्व हो जाता है। योगिनी एकादशी व्रत आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष में रखा जाता है। इस दिन व्रत और भगवान विष्णु की पूजा करने से घर में सुख, समृद्धि और समृद्धि आती है। योगिनी एकदशी निर्जला एकदशी के बाद और देवशयनी एकदशी से पहले की जाती है। तो आइए जानते हैं कि इस साल योगिनी एकादशी का व्रत किस दिन रखा जाएगा और पूजा और पारण का शुभ समय कब होगा।

### व्रत तिथि, शुभ समय और पारण समय

हिंदू पंचांग के अनुसार, आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि 1 जुलाई को प्रातः 10.26 बजे से आरंभ हो रही है और एकादशी तिथि 2 जुलाई को सुबह 8 बजकर 34 मिनट पर समाप्त हो रही है। उदयातिथि के अनुसार योगिनी एकादशी व्रत 2 जुलाई 2024 को रखा जाएगा। वहीं, योगिनी एकादशी व्रत का पारण 3 जुलाई को सुबह 5.28 बजे से सुबह 7.10 बजे तक किया जाएगा। द्वादशी तिथि 3 जुलाई को सुबह 7 बजकर 10 मिनट पर समाप्त होगी।

### 2 शुभ योग में रखा जाएगा योगिनी एकादशी व्रत

योगिनी एकादशी का व्रत 2 शुभ योग में पड़ रहा है। योगिनी एकादशी के दिन त्रिपुष्कर योग और सर्वार्थ सिद्धि योग का निर्माण हो रहा है। सर्वार्थ सिद्धि योग 2 जुलाई को प्रातः 5.27 बजे से अगले दिन 3 जुलाई को सुबह 4.40 बजे तक रहेगा। वहीं त्रिपुष्कर योग 2 जुलाई को सुबह 8.42 से 3 जुलाई को 4.40 तक मान्य है।

ज्योतिष मान्यता के अनुसार सर्वार्थ सिद्धि योग में किया गया कोई भी कार्य सफल होता है। इसके साथ ही त्रिपुष्कर योग में पूजा-पाठ, दान, यज्ञ या कोई और शुभ कार्य करने से उसका तीन गुना फल मिलता है। त्रिपुष्कर योग में योगिनी एकादशी व्रत की पूजा करना बेहद फलदायी रहेगा।

### योगिनी एकादशी की पूजा विधि

- योगिनी एकादशी के दिन सुबह उठकर स्नान पश्चात स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
- श्री हरि विष्णु को पीला रंग प्रिय होता है, इसीलिए इस दिन पीला रंग धारण करें।
- भगवान विष्णु की पूजा करने के लिए चौकी सजाएं और विष्णु भगवान की प्रतिमा रखें।
- इसके अतिरिक्त, भगवान विष्णु पर पीले फूलों की माला अर्पित की जाती है।
- भगवान विष्णु को तिलक लगाएं।
- पूजा सामग्री में तुलसी दल, फल, मिठाइयां और फूल आदि सम्मिलित किए जाते हैं।
- इस दिन योगिनी एकादशी की कथा सुनें और अगले दिन व्रत का पारण करें।

## आषाढ़ माह में इन वस्तुओं का करना चाहिए दान, प्राप्त होगी भगवान विष्णु की कृपा

**आषाढ़ माह भगवान विष्णु को समर्पित है। यही वह माह है, जब भगवान विष्णु चार माह के लिए योग निद्रा में चले जाते हैं। इस दौरान कोई मांगलिक कार्य नहीं होते, लेकिन दान-पुण्य करना शुभ माना गया है।**

हिंदू धर्म में प्रत्येक माह का विशेष महत्व है। इसी कड़ी में आषाढ़ माह भी धार्मिक दृष्टिकोण से शुभ फलदायी माना गया है। यह माह भगवान विष्णु को समर्पित है। मान्यता है कि आषाढ़ माह में भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा करने से उनकी विशेष कृपा प्राप्त होती है, साथ ही आर्थिक समस्याओं से छुटकारा भी मिलता है। इसके साथ ही इस माह में दान का भी विशेष महत्व है, जिससे परिवार में सुख-समृद्धि आती है। आपको यहां बताते हैं, आषाढ़ माह में किन वस्तुओं का दान करना चाहिए।

आषाढ़ माह में वस्त्र का दान करना शुभ माना गया है। मान्यता है कि वस्त्रों के दान से पुण्य फल में वृद्धि होती है और दरिद्रता का नाश होता है। हालांकि वस्त्र दान करते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि ये कहीं से कटे-फटे न हों। आषाढ़ मास में अन्न का दान करने से यश की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि अन्न दान से व्यक्ति के घर में अन्न का भंडार भरा रहता है और पैसों की भी कमी नहीं होती। साथ ही भगवान विष्णु का आशीर्वाद भी मिलता है।

### काले तिल

आषाढ़ माह में काले तिल के दान से पितरों का आशीर्वाद मिलता है। साथ ही सभी मनोकामना भी पूर्ण होती है।

# समस्त पापों का नाश करती है योगिनी एकादशी

आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को योगिनी एकादशी कहा जाता है. इस दिन भगवान विष्णु की पूजा-आराधना की जाती है. माना जाता है कि इस एकादशी का व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं. इस बार योगिनी एकादशी का व्रत 2 जुलाई, मंगलवार के दिन रखा जाएगा. इस व्रत को करने से किसी के दिये हुए श्राप का निवारण भी हो जाता है. योगिनी एकादशी का व्रत करने से सुंदर रुप, गुण और यश का वरदान मिलता है. जानते हैं कि यह एकादशी क्यों मनाई जाती है.

### योगिनी एकादशी का पौराणिक महत्व

योगिनी एकादशी का व्रत तीनों लोकों में प्रसिद्ध है. माना जाता है कि इस व्रत को करने से जीवन में समृद्धि और आनन्द की प्राप्ति होती है. इस एकादशी का व्रत करने से 88 हजार ब्राह्मणों को भोजन कराने के बराबर पुण्य मिलता है. इस एकादशी का व्रत करने से सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है. योगिनी एकादशी को सभी एकादशियों में सबसे महत्वपूर्ण एकादशियों में से एक माना जाता है. इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है. इस व्रत को रखने से पापों का नाश होता है और ग्रहों के दोष दूर होते हैं. इस व्रत को करने से वैवाहिक जीवन में सुख-समृद्धि आती है और संतान प्राप्ति के योग बनते हैं.

योगिनी एकादशी के दिन सुबह ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान करना चाहिए. इसके बाद स्वच्छ वस्त्र धारण करें. घर में भगवान विष्णु की मूर्ति या तस्वीर स्थापित करें और पूरे विधि-विधानपूर्वक से उनकी पूजा करें. भगवान विष्णु को फूल,फल और मीठा भोग अर्पित करें. इस दिन निर्जला व्रत रखकर भगवान विष्णु का ध्यान करना चाहिए. दूसरे दिन सुबह ब्राह्मणों को भोजन करवाकर और दक्षिणा देकर व्रत तोड़ना चाहिए.

# ...तो शनि कभी नहीं करेंगे आपको परेशान

**शनिदेव न्याय के देवता हैं। अगर आपमें यह आदतें हैं तो मान कर चलिए कि शनिदेव आपको कभी परेशान नहीं करेंगे उल्टे आप पर उनकी कृपा दृष्टि सदैव रहने वाली है। हर संकट में वे आपके साथी बनकर राह दिखाएंगे।**

### नाखून काटते रहें

जो लोग रोज अपने नाखून काटते हैं और उन्हें साफ भी रखते हैं, शनि ऐसा करने वालों का हमेशा खयाल रखते हैं। इसलिए अचानक अगर आप अपने नाखून काटने में आलस करने लगें या आपके नाखून गंदे रहने लगे तो समझें कि आपको शनि दशा सुधारने के लिए उपाय करने चाहिए। नाखून काटने की आदत को कभी ना बदलें।

### दान करते रहें

अगर आपका दिल गरीबों, जरूरतमंदों को देखकर पसीज जाता है और हर तीज-त्योहार पर गरीब जरूरतमंद की आप मदद करते हैं तो समझें शनिदेव की आप पर विशेष कृपा है। अगर आप गरीबों को काले चने, काले तिल, उड़द दाल और कपड़े सच्चे मन से दान करते हैं, तो आश्वस्त रहिए कि शनिदेव आपका हमेशा कल्याण ही करेंगे।

### छाते की भेंट देगी शनिदेव की छत्र-छाया

धूप व बारिश से बचने के लिए छाते दान करने वालों पर शनिदेव की छत्र-छाया हमेशा बनी रहती है। अगर अब तक यह आदत नहीं थी तो इसे तुरंत अपनी अच्छी आदतों में शामिल कर लीजिए। आखिर शनिदेव की छत्र-छाया किसे नहीं चाहिए?

### कुत्तों की सेवा

कुत्तों की सेवा करने वालों से भगवान शनि हमेशा प्रसन्न होते हैं। कुत्तों को खाना देने वालों और उनको कभी ना सताने वालों के शनिदेव सभी कष्ट दूर करते हैं। इसलिए अगर आप भी कुत्तों को प्यार करते हैं तो जीवन में शनि कोप से सदा बचे रहेंगे।

### नेत्रहीन को राह दिखाएं

किसी भी नेत्रहीन व्यक्ति को राह दिखाना, उनकी मदद करना शनि को खुश करने में सहायक सिद्ध होता है। जो लोग भी नेत्रहीन लोगों की अनदेखी नहीं करते, उनकी निःस्वार्थ मदद करते हैं, शनिदेव उनसे हमेशा प्रसन्न रहते हैं और उनकी सफलता-उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

### शनिवार का उपवास

शनिवार का उपवास रखकर अपने हिस्से का भोजन गरीबों को देने की आदत है तो समझें शनि की कृपा से अन्न के भंडार आपके लिए हमेशा खुले रहेंगे। ऐसे व्यक्ति अगर जीवन भर इस नियम का पालन करते हैं तो उन्हें कभी धन-संपदा की कमी नहीं होती।

### मछलियों को आहार

जो मछली खाते नहीं है बल्कि मछलियों को खाना खिलाते हैं उनसे शनि हमेशा प्रसन्न रहते हैं। इसलिए अगर आपको भी मछलियों को दाना खिलाने की आदत है तो खुशकिस्मत हैं आप, अपनी इस आदत को छूटने ना दें।

### हर दिन स्नान, साफ स्वच्छ रहने की आदत

प्रतिदिन स्नान कर खुद को साफ रखने वालों पर शनि की कृपा होती है। पवित्र रहने वालों की शनि हमेशा मदद करते हैं।

### सफाई-कर्मियों की मदद

जो सफाई-कर्मियों का सम्मान करते हैं और उनकी आर्थिक मदद भी करते हैं, शनिदेव उनका साथ कभी नहीं छोड़ते। यह आदत कभी न बदलें, भाग्यशाली बनने की राह यही आदत खोलेगी। शनिदेव इस आदत से अत्यंत प्रसन्न रहते हैं।

### साथी हाथ बढ़ाना

जो लोग जरूरतमंद, परेशान और मेहनतकश लोगों की यथासंभव मदद करते हैं, वे शनिदेव को बेहद पसंद होते हैं। शविदेव उनके सारे कष्ट हर लेते हैं। इसलिए मदद करने की अपनी आदत को सदा बने रहने दें।

### पौधारोपण और पीपल बरगद का पूजन

पौधारोपण व पेड़ों का पूजन शनि भगवान को खुश करने के लिए बहुत जरूरी है। जो लोग पीपल और बरगद की पूजा करते हैं उनपर शनि अपनी कृपा अक्षुण्ण बनाए रखते हैं।

### ईमानदारी से आजीविका

ऐसे लोग जो बिना किसी को नुकसान पहुंचाए, सही और धर्म की राह पर चलकर धन अर्जित करते हैं उन्हें शनि अपार लक्ष्मी का वर देते हैं। जो लोग ब्याजखोरी करते हैं, उनसे शनि रुष्ट हो जाते हैं। ब्याजखोरी से बचने वालों की शनि हमेशा सहायता करते हैं।

### सम्मान करने की आदत

वृद्ध माता-पिता तथा स्त्रियों को मां समान मानकर उनका सम्मान करने वालों की शनिदेव हमेशा सहायता करते हैं।

### दिव्यांगों की मदद

दिव्यांगों की सहायता करना शनिदेव को प्रसन्न करता है। ऐसे लोगों का शनि सदैव कल्याण करते हैं। शनि स्वयं एक पैर से शनैः शनैः चलते हैं अतः यथासंभव दिव्यांगों की मदद की आदत डालें।

### शराब से दूरी

शराब का सेवन शनिदेव को नाराज करता है। जो लोग मदिरापान से दूर रहते हैं शनिदेव की कृपा उनपर बनी रहती है।

### शाकाहार की आदत

जो लोग शाकाहार का सेवन करते हैं और मांस, मछली, मीट से दूर रहते हैं उनसे शनिदेव प्रसन्न होकर उनके परिवार समेत उनका भला करते हैं।

### कुष्ठ रोगियों की मदद

कुष्ठ रोगियों की सेवा करना पुण्य का काम माना गया है। शनि भी ऐसे लोगों से प्रसन्न होते हैं जो कुष्ठ रोगियों की सेवा करते हैं। ऐसे लोगों को सारे कष्टों, परेशानियों से शनिदेव बचाते हैं।

## संक्षिप्त समाचार

### जनहित के लिए संघर्ष करेगी छत्तीसगढ़िया क्रांति सेना

**राजनांदगांव।** जिले में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि सहित क्षेत्रिय मुद्दो को लेकर प्रखरता से कार्य करने वाले संगठन छत्तीसगढ़िया क्रान्ति सेना की विभिन्न विषयों को लेकर जिला मुख्यालय राजनांदगांव के बसंतपुर में रविवार को महत्वपूर्ण बैठक आहूत की गई थी। छत्तीसगढ़िया क्रान्ति सेना के जिला अध्यक्ष विजय साहू द्वारा बताया गया कि संगठन के पूर्व के कार्यों की समीक्षा की गई। साथ ही आगामी अगस्त माह में आयोजित होने वाले कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार की गई। जोहार छत्तीसगढ़ पार्टी के जिला अध्यक्ष व राजनांदगांव विधानसभा प्रत्याशी रहे मनीष देवांगन ने बताया कि जिले में संचालित अवैध कार्यों व छत्तीसगढ़ियो के साथ हो रहे अत्याचार को लेकर उन्होंने सेनानी से विस्तार पूर्वक चर्चा कर जल्द ही मैदानी लड़ाई लड़ने का निर्णय बैठक में लिया गया। बैठक में शामिल अन्य सेनानियो संजय साहू, हुकुमचंद बांधे, सोहन साहू, हेमंत वर्मा, भोला राम साहू, प्रवीण बघेल, पिंटू साहू, रजनीश टंडन, संतोषी सलामे, चैतन्य साहू, त्रिलोक निर्मलकर आदि सभी ने जिले में संगठन को ग्राम स्तर तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

### सामाजिक समावेशन कार्यक्रम उद्घाटन समारोह संपन्न

#### जिले में दिव्यांगों के लिए सुविधा बनाने के लिए हो रहा प्रयास

**बलौदाबाजार।** बलौदाबाजार में साइटसेवर्स इंडिया के सहयोग से जन मानव विकलांग कल्याण संघ के सामाजिक समावेशन कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ के पदाधिकारी घनश्याम साहू तथा सावित्री यदु द्वारा की गई। साइटसेवर्स इंडिया जिले में दिव्यांग लोगों के अधिकारों, दृष्टिदोष से पीड़ित बच्चों की शिक्षा, मोतियाबिंद की नेत्र जाँच एवं शल्य चिकित्सा पर सन् 2012 से कार्यरत है और राज्य के 8 जिलों में इस तरह के कार्यक्रम संचालित कर रही है। उद्घाटन पश्चात् कार्य करने की दिशा में संघ द्वारा सामाजिक समावेशन कार्यक्रम के अन्तर्गत जिले के दिव्यांगजनों की सदस्यता के नामांकन करने, सशक्त करने हेतु आजीविका संवर्धन, दिव्यांगजनों के अधिकारों की जानकारी एवं सुरक्षा, दिव्यांग महिलाओं के आजीविका तथा सशक्तिकरण पर भी विशेष ध्यान देंगे। जिले से पधारे विभिन्न पदाधिकारियों एवं विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के द्वारा दिव्यांगता एवं नेत्र स्वास्थ्य के क्षेत्र में साइटसेवर्स इंडिया के कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम के सफल संचालन में समाज कल्याण विभाग के सहायक संचालक अरविन्द गेडाम, जिला रोजगार अधिकारी आजाद सिंह तथा साइटसेवर्स इंडिया की राज्य प्रमुख श्रीमती उर्मीमाला सेनगुप्ता, प्रोजेक्ट ऑफिसर प्रांजल प्रकाश त्रिपाठी एवं जिला बलौदाबाजार टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

**दिव्यांगों के लिए हमेशा सहानुभूति बर्ते - अरविंद गेडाम**- विकलांगता किसी व्यक्ति विशेष का गुण नहीं है, बल्कि परिस्थितियों का एक जटिल समूह है, जिनमें से अधिकांश सामाजिक वातावरण द्वारा निर्मित होती हैं। मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, या शारीरिक संरचना या कार्य की कोई हानि या असामान्यता, उदाहरण के लिए, पक्षाघात या अंधापन ये सब हानि की श्रेणी में आता है। समाज कल्याण विभाग के सहायक संचालक अरविंद गेडाम ने कहा कि दिव्यांगो के लिए रहने की व्यवस्था जिले में कराने की बात, कंपनी नौकरी के लिए बात,जिले में अन्य सुविधाओं के लिए जिलाधीश से बात लगातार हो रही है और इस पर हम बहुत ही जल्दी कुछ नया दिव्यांगों के लिए आयाम लाएऐंगें।

### अवैध मदिरा निर्माण, धारण, परिवहन एवं विक्रेताओं के विरुद्ध लगातार हो रही कार्रवाई

**बालोद।** आबकारी अधिकारी राजेश कुमार शर्मा के नेतृत्व में बालोद जिले में अवैध मदिरा निर्माण, धारण, परिवहन एवं विक्रेताओं के विरुद्ध लगातार कार्रवाई की जा रही है। जिला आबकारी अधिकारी राजेश कुमार शर्मा ने बताया कि जून माह मे जिले में कुल 127 जगहों में छापामार कार्रवाई की गई, जिसमें आबकारी अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत 87 प्रकरण दर्ज कर कुल 52.86 लीटर मदिरा एवं 01 वाहन जप्त की गई है। जिसमें सार्वजनिक स्थलों में मदिरापान के 67 प्रकरण, गुमटी, होटल, ढाबों में अवैध रूप से मदिरा पिलाने के 12 प्रकरण, मदिरा कोचियों के विरुद्ध कार्रवाई के 08 प्रकरण तथा जेल दाखिल के 01 प्रकरण शामिल है। उन्होंने बताया कि जिले में शराब के अवैध निर्माण, धारण, विक्रय, परिवहन एवं अवैध रुप से मद्यपान की सुविधा उपलब्ध कराने तथा सार्वजनिक स्थल पर मदिरापान करने वालों पर प्रभावी नियंत्रण करने आबकारी अमले द्वारा सघन गश्त एवं छापे की कार्रवाई की जा रही है।

# नाली से अवैध कब्जा हटवाने वार्डवासियों ने दिया आवेदन

### प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाने गरीब विधवा ने लगाई गुहार

### जनदर्शन में प्राप्त हुए 150 आवेदन

**दुर्ग ( समय दर्शन )।** कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी के निर्देश पर अपर कलेक्टर बजरंग दुबे ने जनदर्शन में बड़ी संख्या में पहुंचे लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनी। उन्होंने जनदर्शन में पहुंचे सभी लोगों की समस्याओं को गंभीरता से सुना और समुचित समाधान एवं निराकरण करने संबंधित विभागों को शीघ्र कार्यवाही कर आवश्यक पहल करने को कहा। जनदर्शन में आज 150 आवेदन प्राप्त हुए।

जनदर्शन में आवेदन लेकर पहुंचे रामनगर सुपेला वार्ड 19 भिलाई के निवासियों ने बताया कि नवनिर्मित मकान मालिक द्वारा अपनी जमीन के बाहर नाली पर अवैध कब्जा कर निर्माण किया जा रहा है, नाली पर अवैध निर्माण हो जाने के कारण पानी निकासी की समस्या आ रही है। इस पर अपर कलेक्टर ने तहसीलदार भिलाई नगर को निरीक्षण कर आवश्यक कार्यवाही करने को कहा।

घासीदास नगर निवासी ने प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाने आवेदन किया। उन्होंने बताया कि वह विधवा है उनका एक बेटा है, जो पढ़ाई कर रहा है। आर्थिक स्थिति ठीक नही होने के कारण कच्चे मकान में निवासकर जीवकोर्पाजन कर रही है, जिसमें हमें कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत नाम सूची में दर्ज होने के पश्चात भी आज दिनांक तक इस योजना का लाभ नही मिल पाया है। इस पर अपर कलेक्टर ने नगर निगम भिलाई को कार्यवाही करने को कहा।

वार्ड नंबर 12 मोहन नगर निवासी ने अमृत मिशन योजना के तहत नल कनेक्शन हेतु आवेदन दिया। वार्ड नंबर 12 में पानी की परेशानी को देखते हुए वार्डवासियों द्वारा अमृत मिशन योजना के तहत नल कनेक्शन हेतु जल घर में आवेदन प्रस्तुत किया गया। लेकिन आज दिनांक तक कोई भी कार्यवाही नही हो पाई है। वार्डवासियों को पानी के लिए बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इस पर अपर कलेक्टर ने नगर निगम दुर्ग को निरीक्षण कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

ग्राम सिरसा कला निवासी ने काबिज भूमि का पट्टा दिलाने की मांग की। उन्होंने बताया कि उनका गरीब परिवार 50 वर्षो से कच्चा मकान बनाकर निवासरत है। नगर पालिका निगम भिलाई चरोदा में टैक्स जमा किया जा रहा है। मकान पट्टा के संबंध में आसपास में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति नही है। निवासरत जमीन के अलावा कोई भी खेती बाड़ी नही है। इस पर अपर कलेक्टर ने तहसीलदार भिलाई-3 को आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

जनदर्शन में राशन कार्ड में नाम जोड़वाने, अनुकम्पा नियुक्ति, भारत माला परियोजना अंतर्गत मुआवजा राशि दिलाने, स्कूल में एडमिशन दिलाने, जाति प्रमाण पत्र में त्रुटि सुधार के आवेदन के साथ-साथ अवैध कब्जा के अधिक आवेदन प्राप्त हुए।

# निगम दुर्ग की स्वच्छता दीदी बना रही है गीले कचरे से बनेगी खाद, सूखा कचरा होगा रिसाइकिल

**दुर्ग ( समय दर्शन )।** जुलाई।नगर पालिक निगम क्षेत्र सीमा अंतर्गत डोर-टू-डोर कूड़ा उठाव को लेकर शहर में जगहों पर कूड़ा को जीरो वेस्ट में छोड़ा जा रहा है। दुर्ग नगर पालिक निगम द्वारा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन अंतर्गत प्रतिदिन डोर टू डोर कलेक्शन से प्राप्त गीले कचरे से स्वच्छता दीदियों द्वारा जैविक खाद बनाया रहा जा है। सूखे कचरे (जैसे कागज, प्लास्टिक सामान, लोहा आदि) को विक्रय कर रिसाइकल किया जाता है। तथा मल्टी लेयर प्लास्टिक को बेलिंग मशीन द्वारा बेल कर जे के लक्ष्मी सीमेंट प्लांट को विक्रय किया जाता है।महापौर धीरज बाकलीवाल और आयुक्त लोकेश चन्द्राकर द्वारा शहर के नागरिकों से गिला और सुखा कचरा अलग अलग स्वच्छता दीदियों को देने और कचरा बाहर न फेंकने की अपील की गई है,इससे घर-घर से निगम के वाहन के माध्यम से कचरा उठाने के बाद सीधे कचरा जीरो वेस्ट सेंटर में छोड़ा जा रहा है। बता दे कि हर दिन गीला-सूखा कचरा अलग किया जा रहा दुर्ग निगम द्वारा रिसाइकिल,रिडयूस व रियूज के सिद्धांत के तहत अच्छा वेस्ट मैनेजमेंट बेहतर कार्य कर रहा है। शहर के हर घरों से गीला और सूखा कचरा प्रतिदिनअलग-अलग लिया जाता है। औसतन 125 टन से अधिक कचरा प्रतिदिन उत्पादित होता है, जिसमे 76 टन गीला एवं 49 टन सूखा कचरा होता है।वार्डो में चलने वाले निगम की वाहन में नीले और हरे रंग के डस्टबिन होंगे। इसमें लोग गीला और सूखा कचरा डालेंगे। गीले कचरे से वर्मी कंपोस्ट, खाद, जबकि सूखे कचरा को रिसाइकिल कर उपयोग किया जा रहा है।स्वास्थ्य विभाग प्रभारी हमीद खोखर एवं स्वस्थ्य अधिकारी जावेद अली,जिला समन्वयक कुणाल खड़तकर, राहुल मोरने जनता ने अपील कर कहा कि हरे (गिला कचरा ) डस्टबिन में सब्जी व फ्रूट के छिलके,सब्जी,फ्रूट व अंडे के छिलके रखे जाएंगे।खाने के बाद बची सामग्री को भी इसी में डालना होगा। चिकेन और मछली से निकली हड्डिया, सड़े हुए फ्रूट और सब्जी, चायपत्ती और कॉफी के अवशेष, पेड़ों के नीचे गिरी पत्तिया, सड़क पर बिखरे फूल-पत्ती आदि को हरे डस्टबिन में रखना है।नीले(सुखा कचरा) डस्टबिन में सूखा कचरा।नीले डस्टबिन में प्लास्टिक कवर, बॉटल, बक्से, मेमोरी कार्ड (चिप), टॉफी रैपर, प्लास्टिक कप, दूध-दही पैकेट आदि रखने हैं। इसके अतिरिक्त समाचार पत्र-पत्रिका, स्टेशनरी, कार्डबोर्ड कॉर्टन, पिज्जा बॉक्स, टेट्रा पैक (जूस, दूध, माजा की पैकिंग), कागज के कप और प्लेट रखे जाएंगे। धातु से बनी खाना पैक करने वाली कटोरी, धातु के कैन भी इसी डस्टबिन में रखे जाएंगे। इसके अतिरिक्त रबर, थर्मोकोल,डस्टर, रुई, गद्दे, कॉस्मेटिक्स,मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के अवशेष, बाल, नारियल के छिलके भी इसी में रखे जाएंगे।

मानी कंचन केंद्र में आरआरआर सेंटर का भी प्रारंभ किया गया है , जिसमे जनता दान पुराने समान , कपड़े , बर्तन ,पुस्तकें दिया जा जा सकता है , जिसका पुन: उपयोग जरूरतमंदों द्वारा किया जा सके ।

# अग्रवाल महिला मंडल ने स्कूली बच्चों को वितरित किए कापी, पेंसिल सेट व फल

**रायपुर ( समय दर्शन )।** चौबे कॉलोनी अग्रवाल महिला समिति के द्वारा शनिवार को पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय के पीछे कुकुरबेड़ा स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 700 से अधिक बच्चों को कापी, पेंसिल का सेट, फ्रूट, चॉकलेट का वितरण किया। कॉपी और पेन्सिल पाकर बच्चे जहां खुश हुए वहीं शाला की प्राध्यापिका ने इसके लिए अग्रवाल महिला मंडल का आभार जताया। इस अवसर पर अग्रवाल महिला मंडल की अध्यक्ष माया मुरारका, कोषाध्यक्ष राज बंसल, चौबे कॉलोनी की महिला मंडल की संयोजिका मंज अग्रवाल, सह-संयोजिका सरिता रेखानी, मीडिया प्रभारी ज्योति अग्रवाल, चौबे कॉलोनी अग्रवाल सभा के मार्गदर्शक रमेश अग्रवाल, डा. गोपा शर्मा, अरुण अग्रवाल, संयोजक दीपक, सचिन, संदीप, निलेश, युवती मंडल की अध्यक्ष श्रद्धा अग्रवाल, महिला मंडल की पूर्व संयोजिका सुनीता अग्रवाल, निकिता भाभी, महिला मंडल की सदस्य इन्दु अग्रवाल, कांता अग्रवाल, ममता बंसल मौजूद थी।

अग्रवाल महिला मंडल की प्रचार प्रसार मंत्री ज्योति अग्रवाल ने बताया कि में गरीब तबके के बच्चे पढ़ाई करने आते हैं जिन्हें शासन के द्वारा पुस्तकें, मध्यान्यह भोजन तो मिल जाता हैं लेकिन कॉपी, पेंसिंल, पेन के लिए वह तरसते रहते हैं। राज्य में इस समय शाला प्रवेशोत्सव चल रहे है और इसी को देखते हुए अग्रवाल महिला मंडल की 22 मोहल्ला समितियां शासकीय स्कूल में जाकर बच्चों को कॉपी, पेंसिल का सेट, पेन व और भी जरुरत की चीजों का वितरण कर रही हैं। इसी के तहत शनिवार को चौबे कॉलोनी अग्रवाल महिला समिति के सदस्य पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय के पीछे कुकुरबेड़ा स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पहुंचे और यहां पर कक्षा पहली से पांचवीं तक के 700 से अधिक बच्चों को 700 कापी, 500 पेन, 500 पेंसिल सेट, केक चॉकलेट, जूस व आम का वितरण करते हुए उनका मनोबल बढ़ाया, जिन्हें पाकर बच्चे बहुत खुश हुए।

चौबे कॉलोनी अग्रवाल महिला समिति की संयोजिका मंजू अग्रवाल और सह-संयोजिका सरिता रेखानी ने कहा कि शासन के द्वारा तो इन बच्चों को पुस्तकें और भोजन तो मिल जाता है लेकिन लिखने के लिए कापी और पेंसिल नहीं मिल पाता हैं, चौबे कॉलोनी मोहल्ला समिति के द्वारा हर साल यहां पढ़ाई कर रहे बच्चों को कॉपी और पेंसिल का वितरण किया जाता है। पिछले साल की अपेक्षा इस साल बच्चों की संख्या अधिक रही और यह हमारे लिए गर्व की बात हैं कि बड़ी संख्या में बच्चे शासकीय स्कूल में पढ़ाई करने आ रहे है और हम उनकी जरुरतों को पूरा कर रहे है।

अग्रवाल महिला मंडल की अध्यक्ष माया मुरारका ने कहा कि शाला प्रवेशोत्सव के बाद अग्रवाल महिला मंडल के 22 मोहल्ला समितियों के द्वारा वृहद रुप में वृक्षारोपण किया जाएगा ताकि लोगों को ऑक्सीजन के साथ ही शुद्ध हवा मिल सकें।

## 3/11 के.व्ही. विद्युत उपकेन्द्रों के ऑपरेटरों का निम्न समस्याओं का निराकरण करने कार्यपालन यंत्री को सौपा ज्ञापन

**सारँगढ़ ( समय दर्शन )।** 33/11 के.व्ही समस्त सारँगढ़ डिवीजन ऑपरेटर संघ ने निम्न मांगो को लेकर कार्यपालन यंत्री को ज्ञापन सौपा जिसमे लेख है कि जून 2024 और मई 2024, रनिंग, माह का पेमेंट 10 तारिख तक दिलवायें ।

फरवरी 2024 से अभी तक ई.पी.एफ, ई.एस.आई.सी. बीमा राशि को जमा करवायें। छः माह का अप्राप्त बोनस को जून माह के पेमेंट के साथ दिलवायें । विद्युत उपकेन्द्रों में सुरक्षा सामाग्री प्रदान करवायें । सभी उपकेन्द्रों की साफ-सफाई करनायें।

बताया कि हम ऑपरेटरों का ऊपर दिये गये समस्या गंभीर है पेमेंट और बीमा राशि जमा नहीं होने के कारण हम सभी आपरेटरों का आर्थिक एवं मानसिक रूप से परेशान हैं और हमारी दैनिक स्थिति बहुत खराब हो गयी है। हमारे उपरोक्त समस्याओं के विषय में पहले भी कई बार लिखित अनुरोध पत्र दे चुके हैं उसके बावजूद भी अभी तक कोई सुधार नहीं हुआ है। यदि दिनांक 30/06/2024 तक हमारी उपरोक्त समस्याओं का निराकरण नहीं होने पर, दिनांक 03/07/2024 से समस्त 33/11 के.व्ही. विद्युत उपकेन्द्र आपरेटरों द्वारा सामुहिक अवकाश में जाने को बाध्य होंगे जिससे होने वाली असुविधा के लिए सम्पूर्ण जवाबदारी विद्युत विभाग सारंगढ़ की होगी।

# विद्या का मंदिर जर्जर स्थिति में : 3 माह में जर्जर हुआ करोड़ों की लागत से बना स्कूल

### कही छत से टपक रहा पानी तो कही टूट रहा दीवाल

**बिलाईगढ़ ( समय दर्शन )।** बच्चों के भविष्य को संवारने विद्या का मंदिर बनाया जाता है या यू कहे विद्यालय का निर्माण किया जाता है। अगर तीन माह में करोड़ों रुपए के लागत से निर्माण किए गए विद्यालय भवन जर्जर स्थिति में आ जाए तो आप समझ सकते हैं कि इस विद्यालय को कितना गुणवत्ताहीन बनाया गया है। हम बात कर रहे हैं सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले के बिलाईगढ़ विकासखंड में स्थित शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल बेलटिकरी का इस स्कूल की हालत देख आप खुद समझ जाएंगे इस स्कूल में करोड़ों रुपए के स्वीकृत का किस प्रकार उपयोग किया गया है।

बता दे की शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल बेलटिकरी का नजारा कुछ ऐसा है की यहा दीवाल टूट रहा है, छत से पानी टपक रहा है और प्रयोग शाला कक्ष में जमीन धशक रहा है। बता दे की इस स्कूल को मात्र 3 से 4 माह पहले प्राचार्य को ठेकेदार और पीडब्ल्यूडी विभाग के द्वारा हैंड ओवर किया गया है। लेकिन इस स्कूल की हालत देख आपको यह लगेगा कि यह करीब 5 साल से 10 साल पहले बनाया हुआ स्कूल होगा। लेकिन आप गलतफहमी में है हम आपको बताते हैं कि यह स्कूल 1 वर्ष पहले ही निर्माण कराया गया है मिली जानकारी के अनुसार पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के द्वारा इस स्कूल को स्वीकृत किया गया था। और इसकी स्वीकृत राशि एक करोड़ 22 लाख 16 हजार रुपए बताई गई है। लेकिन निर्माण एजेंसी पीडब्ल्यूडी विभाग और ठेकेदार शशांक अग्रवाल के द्वारा इस विद्या के मंदिर का गुणवत्ताहीन निर्माण कराया गया है जिससे इस विद्यालय का छत टपक रहा है और दिवाले फट चुकी है। इस विद्यालय में पीछे से सर्प बिच्छू भी विद्यालय में प्रवेश कर रहे हैं जिससे बच्चो को जान का खतरा भी है। स्थानीय ग्रामीणों के साथ साथ डोल कुमार जायसवाल अध्यक्ष जनभागीदारी समिति, शुशील कुमार गुप्ता (प्राचार्य), हरिशंकर जायसवाल (सरपंच) के साथ सभी जनभागीदारी समिति के सदस्यों ने ठेकेदार के ऊपर कड़ी कार्यवाही की मांग की है। सरपंच

हरिशंकर जायसवाल ने कहा कि जब यह भवन का निर्माण किया जा रहा था तब मैं भी बीच-बीच पर निरीक्षण कर रहा था कई बार मैंने अधिकारियों और ठेकेदार को कहा कि यहां गुणवत्ता से कम करें लेकिन मेरी बात किसी ने नहीं मानी ।

**500 बच्चो का भविष्य के साथ खिलवाड़**- बता दे कि इस विद्यालय में कक्षा 9 वीं से 12वीं तक करीब 500 बच्चे अध्यनरत है जिनको अपने नए विद्यालय में पढ़ने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अभी तो बरसात की शुरुवात ही हुई है ऐसे में छत से अगर पानी टपक रहा है तो आप समझ सकते हैं आने वाले बरसात के दिनों में यहां बच्चों को पढ़ना कितना सुरक्षित होगा । और बच्चों के पढ़ाई के साथ ही साथ भविष्य में क्या प्रभाव पड़ेगा ।

**विधायक ने कहा सत्र में उठाएंगे बात**- इन सभी बच्चों की समस्याओं को बिलाईगढ़ के विधायक कविता प्राण लहरें ने जाना और विभागीय जांच की मांग की तथा ठेकेदार पर कड़ी कार्रवाई करने की भी मांग की गई विधायक कविता प्राण लहरें ने कहा कि मैं अपने क्षेत्र में बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं कर सकती अगर कार्रवाई नहीं होगी तो आने वाले दिन में विधानसभा सत्र में यह मुद्दा मेरे द्वारा उठाया जाएगा। साथ ही मैं स्कूल का निरीक्षण कर अधिकारियों को कड़ी कार्यवाही करने के बारे में चर्चा भी करूंगी ।

**मामले में अधिकारी दे रहे है गोल मोल जवाब**- बता दे की इस मामले में लोक निर्माण विभाग के अधिकारी और इंजीनियर गोल मोल जवाब दे रहे है जिससे यह आशंका भी लगाई गई है कि इस गुणवत्ताहीन निर्माण में विभाग की भी बराबर भूमिका है । इस मामले में हमने इंजीनियर सुनील कुमार पैकरा से जब जानकारी ली तब उनका कहना है गर्मी के दिनों में यहां छत का कार्य हुआ है और दो से तीन हिस्सों में हुआ है इस कारण से समस्या आई होगी। जल्द ही मरम्मत कर दिया जाएगा । वही प्रभारी एसडीओ पीडब्ल्यूडी भटगांव बंछोर जी को इस बारे में तो जानकारी तक नहीं है। अब सवाल यही है कि बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वाले ठेकेदार के साथ-साथ अधिकारियों पर क्या कुछ कार्रवाई होता है यह तो आने वाला समय ही बताएगा ।

## खबर-खास

### रियलमी ने 8,999 रुपये मूल्य में अपने सेगमेंट के एकमात्र वेगन लैदर डिज़ाईन के साथ रियलमी सी 63 पेश किया

**नई दिल्ली।** भारतीय युवाओं के सबसे लोकप्रिय स्मार्टफ़ोन ब्रांड, रियलमी ने आज अपनी चैंपियन सीरीज़ में सबसे नया स्मार्टफ़ोन रियलमी सी63 पेश किया। रियलमी सी63 एक बजट-फ्रेंडली स्मार्टफ़ोन है, जो अपने सेगमेंट में एकमात्र वेगन लैदर डिज़ाईन के साथ स्टाईल और ड्यूरेबिलिटी प्रदान करता है। रियलमी सी63 में 45 वॉट का फ़ास्ट चार्जर दिया गया है, जो इसे बहुत तेजी से चार्ज कर देता है। साथ ही इसकी 5,000 एमएएच की बैटरी भारी उपयोग के बाद भी पूरे दिन पर्याप्त पॉवर प्रदान करती है। रियलमी सी63 में फ्लैगशिप लेवल के एआई अनुभव और इनोवेटिव फ़ीचर्स जैसे एयर गेस्चर, रेनवॉटर स्मार्ट टच और इसका अत्यधिक लोकप्रिय मिनी कैप्सूल 2.0 फ़ीचर दिए गए हैं। इस लॉन्च के बारे में रियलमी के प्रवक्ता ने कहा, ''हम अपनी चैंपियन सीरीज़ में नया स्मार्टफ़ोन, रियलमी सी63 पेश करके उत्साहित हैं। रियलमी में हम ऐसी इनोवेटिव टेक्नोलॉजी प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो हमारे युवा ग्राहकों की जरूरतों और अपेक्षाओं को पूरा कर सके।

### कृषि क्षेत्र की चुनौतियों के निदान के लिए पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप जरूरी : विशेषज्ञ

**रायपुर।** भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और अग्रणी कृषि-इनपुटकंपनी धानुका के विशेषज्ञों ने किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों कासमाधान करने के लिए पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप को प्रगाढ़ करने केउद्देश्य के साथ एक साथ आकर रायपुर के आईजीकेवी के प्रांगण मेंआईसीएआर और धानुका एग्रीटेक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित केवीकेकार्यशाला को संबोधित किया। कृषि क्षेत्र की चुनौतियों के समाधान के लिए सरकार पब्लिक-प्राइवेटपार्टनरशिप को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित कर रही है। इस तरह से सहयोग सेसरकारी और निजी संस्थाओं के संसाधन, विशेषज्ञता और नवीन समाधानएक ही जगह लाने में मदद मिलती है, जिसकी कृषि विस्तार सेवाओं कीपहुंच और प्रभावशीलता को बड़े स्तर पर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका है, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय (आईजीकेवी) के उपकुलपति डॉ. गिरीशचंदेल ने कहा। विशेषज्ञों ने इस अवसर पर देशभर में कृषि उत्पादन और किसानों की आय मेंवृद्धि के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने पर भी जोर दिया। कार्यशाला में मुख्य भाषण में धानुका समूह के चेयरमैन डॉ. आर. जी. अग्रवाल ने कहा, भारतीय खेती-बाढ़ी को आईटी, आईओटी, प्रिसिजनएग्रीकल्चर और ड्रोन जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी से तुरंत जोड़ना बेहदजरूरी है। प्रति एकड़ कृषि उत्पादन बढ़ाने में इसकी बहुत ही महत्वपूर्णभूमिका रहेगी, जो कि कुछ विकसित और चीन जैसे विकासशील देशों कीप्रति एकड़ उत्पादकता से काफी कम है।

### जिले के प्रभारी मंत्री श्री टंकराम वर्मा 2 जुलाई को सारंगढ़ में लेंगे समीक्षा बैठक

**सारंगढ़ बिलाईगढ़ (समय दर्शन)।** राजस्व, खेल एवम युवा कल्याण मंत्री तथा सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले के प्रभारी मंत्री टंकराम वर्मा 2 जुलाई को जिले के प्रवास पर रहेंगे। निर्धारित कार्यक्रम अनुसार कलेक्टर कार्यालय सारंगढ़ के सभाकक्ष में दोपहर 2 बजे मंत्री श्री वर्मा जिले के सभी विभागों की समीक्षा बैठक लेंगे, जिसमें जिले के जिला और अनुविभाग स्तर के अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

# उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा को अयोध्या और काशी विश्वनाथ से लौटे दर्शनयात्रियों ने

### श्रवण बेटा कहकर दिया आशीर्वाद

**कवर्धा (समय दर्शन)।** महामाया मंदिर चौक स्थित विधायक कार्यालय में रविवार 30 जून को अयोध्या से श्री रामलला और काशी विश्वनाथ के दर्शन कर यात्री और भक्तगण लौटे। दर्शनार्थियों के स्वागत कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा श्रद्धालुओं का स्वागत किया और सभी भक्तों को उनकी सफल और सुरक्षित यात्रा की बधाई शुभकामनाएं दीं। वहीं अयोध्या और काशी विश्वनाथ से लौटे दर्शनयात्रियों ने विजय शर्मा को श्रवण बेटा कहकर आशीर्वाद दिया।

उपमुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हम अपने प्रदेश के श्रद्धालुओं को श्री रामलला के दर्शन के लिए शासकीय सहायता दे पा रहे हैं। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में यह योजना सफलतापूर्वक संचालित हो रही है और हमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी को पूरा करने में भी सफलता मिल रही है। मुख्यमंत्री श्री साय ने 5 मार्च को इस योजना के तहत छत्तीसगढ़ से अयोध्या तक चलाई जा रही विशेष ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था। 26 जून को कवर्धा जिले



के जनपद पंचायत और नगरी निकाय क्षेत्र के कुल 71 श्रद्धालु इस यात्रा में शामिल हुए, जिनमें महिलाएं भी शामिल थीं। इस यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं ने अयोध्या में श्री रामलला के दर्शन किए।

उपमुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश के स्थानीय निवासी जिनकी आयु 18 वर्ष से 75 वर्ष के बीच है, वे इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। यह योजना उनके जीवन में एक बार उत्तर प्रदेश राज्य के अयोध्या में स्थित श्री रामलला और काशी विश्वनाथ के दर्शन हेतु शासकीय सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई है। इस योजना से अब आम जनता को लाभ मिलने लगा है और यह यात्रा धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण मानी जा रही है। कार्यक्रम के दौरान उपमुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश के निवासियों को धार्मिक पर्यटन के माध्यम से धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करना है। उन्होंने कहा, हमारा उद्देश्य है कि छत्तीसगढ़ के अधिक से अधिक लोग इस योजना का लाभ उठाएं और श्री रामलला के दर्शन कर सकें। इससे हमारे प्रदेश की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को भी बढ़ावा मिलेगा। श्री रामलला और काशी विश्वनाथ के दर्शन कर लौटे दर्शनार्थियों ने उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा को भगवान श्री रामलला और काशी विश्वनाथ के दर्शन कराने के लिए आभार व्यक्त किया। श्रद्धालुओं ने उन्हें श्रवण बेटा कहकर आशीर्वाद दिया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

## जल एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बढ़ाए कदम, आने वाले कल को बनाएं बेहतर – कलेक्टर श्री अग्रवाल

### नारी शक्ति से जल शक्ति के तहत जिला स्तरीय जल संवाद कार्यक्रम का हुआ आयोजन




**गरियाबंद (समय दर्शन)।** वर्षा जल संरक्षण एवं जल के सभी स्त्रोतों के रखरखाव सहित जल के महत्व को आमजनों को बताने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा महत्वकांक्षी ''कैच द रैन'' अभियान चलाया जा रहा है।इसी अभियान के तहत जल संरक्षण की दिशा में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए नारी शक्ति से जल शक्ति अभियान का आयोजन 29 नवम्बर 2024 तक किया जा रहा है। इसी तारतम्य में जिला मुख्यालय के इंडोर स्टेडियम में नारी शक्ति से जल शक्ति अभियान 2024 के तहत आज जिला स्तरीय जल संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया।इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कलेक्टर दीपक अग्रवाल शामिल हुए।कार्यक्रम में विविध गतिविधियों का संचालन किया गया।इसके तहत अतिथियों को पौधा भेंट कर पर्यावरण संरक्षण में सकारात्मक पहल करने को प्रेरित किया गया। साथ ही जल बचाव में भागादारी निभाने जल मितान एवं जल सखी लिखा हुआ रिस्ट बैंड पहनाया गया।साथ ही स्कूली बच्चों,कॉलेज के विद्यार्थियों एवं कला जत्था के सदस्यों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जल संरक्षण के लिए लोगों को प्रेरित करने मनमोहक एवं ज्ञानवर्धक प्रस्तुति दी। बच्चों ने भाषण के माध्यम से भी जल संरक्षण को भी प्रेरित किया। साथ ही कलेक्टर एवं अन्य अतिथियों ने वृक्षारोपण भी किया। इसके साथ ही स्वसहायता समूह की महिलाओं ने जल संरक्षण के लिए कलश यात्रा निकाल कर लोगों को भी जल बचाव के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम में मौजूद सभी लोगों ने जल बचाव का संकल्प लिया।इस अवसर पर कलेक्टर श्री अग्रवाल ने नारी शक्ति से जल शक्ति अभियान की प्रचार रथ को हरी झण्डी दिखाकर इंडोर स्टेडिमय से रवाना किया। कार्यक्रम में जिले की नवाचारी पहल के तहत पोषण निवेश कार्यक्रम की शुरूआत की गई।इसके तहत चार नवविवाहित महिलाओं को फलदार पौधा भेंटकर उन्हें छोटे बच्चे की तहत उनका देखभाल करने की जिम्मेदारी सौंपी गई।जिससे आने वाले दिनों उक्त पौधे बड़े होकर पोषण प्रदान करने में सहायक होंगे। इस दौरान जिला पंचायत की सीईओ रीता यादव,ईई जल संसाधन एसके बर्मन सहित अन्य विभागीय अधिकारी,विद्यार्थीगण एवं आमजन मौजूद रहे। जिला स्तरीय जल संवाद कार्यक्रम को कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने संबोधित करते हुए कहा कि सभी के लिए महत्वपूर्ण है। जल हमारे शरीर के लिए ऊर्जा स्त्रोत के रूप में काम करता है। साथ ही पशु – पक्षियां एवं पेड़ – पौधों के जीवन के लिए भी जल आवश्यक है। उन्होंने पृथ्वी पर शुद्ध जल के सीमित स्त्रोत होने की जानकारी देते हुए जल एवं पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता के बारे में लोगों को जागरूक किया। उन्होंने आने वाले बेहतर कल के लिए जल संरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाने का आग्रह सभी लोगों से किया।कलेक्टर श्री अग्रवाल ने सभी अपने आसपास के जल स्त्रोतों,नदी – नालों एवं अन्य माध्यमों को संरक्षित करने तथा आवश्यकतानुसार ही दोहन करने के बारे में जागरूक किया।उन्होंने जल शक्ति अभियान के बारे में बताते हुए कहा कि इस अभियान के तहत नारी शक्ति से जल शक्ति कार्यक्रम का आयोजन केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा चलाया जा रहा है।

## जिले में डायरिया रोको अभियान एवं जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़ा का हुआ शुभारंभ

### कलेक्टर श्री अग्रवाल ने जागरूकता रथ को हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना




**गरियाबंद (समय दर्शन)।** कलेक्टर दीपक अग्रवाल के निर्देशन एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के मार्गदर्शन में डायरिया से बचाव एवं सुरक्षा हेतु डायरिया रोको अभियान 1 जुलाई से 31 अगस्त 2024 तक तथा जनसंख्या वृद्धि को रोकने हेतु जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़ा 24 जुलाई 2024 तक मनाया जायेगा। जिसके अंतर्गत कलेक्टर श्री अग्रवाल ने आज जागरूकता एवं प्रचार-प्रसार रथ को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। साथ ही उन्होंने कार्यक्रम का गंभीरतापूर्वक संचालन एवं क्रियान्वयन करने के निर्देश दिये। जागरूकता रथ जिले के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर बारिश के मौसम में डायरिया को रोकने एवं बचाव के लिए लोगों को जागरूक करेगा। साथ जनसंख्या नियंत्रण के बारे में भी लोगों को जानकारी प्रदान करेगा। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.गार्गी यदु पाल जिला परिवार कल्याण अधिकारी डॉ.लक्ष्मीकांत जांगड़े जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ.योगेन्द्र सिंह रघुवंशी, सलाहकार (एनटीसीपी) डॉ.सृष्टि यदु,जिला एपिडेमियोलॉजिस्ट डॉ.शंकर पटेल,जिला डाटा प्रबंधक लम्बोदर महतो सहित बड़ी संख्या में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी-कर्मचारी एवं मितानिन उपस्थित थे। सीएमएचओ ने बताया कि सामान्यत: बारिश के दिनों में वायरल एवं बैक्टीरियल संक्रमण के कारण डायरिया का खतरा बढ़ जाता है।डायरिया के कारण बच्चों में मतली, उल्टी,वजन कम होना तथा उपचार न कराने पर निर्जलीकरण की समस्या बढ़ जाती है। इसी कारण लोगो में जागरूकता लाने,ओ.आर.एस. एवं जिंक की जानकारी,डायरिया से पीड़ित बच्चों की पहचान कर उन्हे उच्च संस्था में रिफर करने हेतु प्रोत्साहित करने तथा उपचार प्रबंधन कर शिशु मृत्यु दर को कम करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष गहन डायरिया नियंत्रण पखवाड़ा मनाया जाता था।जिसे इस वर्ष केन्द्र सरकार द्वारा डायरिया रोको अभियान 2024 के रूप में जुलाई तथा अगस्त पूरे 2 माह तक मनाया जायेगा। इस अभियान के दौरान मितानिन एवं ऑगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के द्वारा घर-घर भ्रमण कर 0-5 वर्ष के बच्चों को ओ.आर.एस. पैकेट एवं जिंक का टेबलेट वितरण किया जायेगा। ओ.आर.एस.या जीवन रक्षक घोल बनाने की विधि एवं हाथ धुलाई का प्रदर्शन किया जायेगा। साथ ही गर्भवती एवं शिशुवती माताओं को शिशु पोषण एवं पौष्टिक आहार संबंधी जानकारी दी जावेगी। सभी स्वास्थ्य केन्द्रों में ओ.आर.टी. कार्नर की स्थापना कर ओ.आर.एस. घोल दस्त पीड़ितों को पिलाया जायेगा।

**नाम परिवर्तन**

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं दिनदयाल यादव, आत्मज स्व. गोपाल यादव, उम्र 36 वर्ष, निवासी घासीदास नगर वार्ड नंबर-10, घुघसीडीह, खोपली, तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.) का हूं। मेरे पुत्र ऐश्वर्य कुमार (Ashwary Kumar) आ. दिनदयाल यादव की जन्मतिथि 11.06.2010 है तथा आधार कार्ड क्रमांक 7931 6790 3121 है जो कि सत्य व सहीं है तथा मेरा पुत्र वर्तमान में नाबालिग है।

मेरे पुत्र के समस्त शैक्षणिक योग्यता प्रमाण पत्र कक्षा 1 से 8 वीं तक शाला अभिलेख दाखिला खारिज, आधार कार्ड में त्रुटिवश नाम ऐश्वर्या कुमार (Ashwarya Kumar) 300 दिनदयाल यादव अंकित है जिसे आगे भविष्य में मैं अपने पुत्र के संपूर्ण समस्त शैक्षणिक योग्यता प्रमाण पत्र, कक्षा 1 से 8 वीं तक शाला अभिलेख दाखिला खारिज, आधार कार्ड में सहीं वास्तविक व परिवर्तित / संशोधित नाम ऐश्वर्य कुमार (Ashwary Kumar) आ. दिनदयाल यादव रखना चाहता दर्ज करवाना चाहता हूं ।

दुर्ग

दिनांक 26.06.2024

**आवेदक**

**दिनदयाल यादव, आत्मज स्व. गोपाल यादव, निवासी- घासीदास नगर वार्ड नंबर-10, घुघसीडीह, खोपली, तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.) मोबाईल नंबर-7746802091**

**नाम परिवर्तन**

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं मोहम्मद हासिम (MOHAMMD HASIM) पिता नियाज अहमद (NIYAJ AHAMED) उम्र 38 वर्ष, निवासी मकान नंबर-317, वार्ड नंबर-20, सुपेला, थाना-सुपेला भिलाई, तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.) का हूं। मेरे नाम से जारी समस्त शैक्षणिक दस्तावेज में मेरा नाम मोहम्मद हासिम (MOHD HASIM) पिता नियाज अहमद (NIYAJ AHAMED) अर्थात मेरा नाम त्रुटिवश अंग्रेजी में शार्टकट MOHD उल्लेखित है।

यह कि मेरे नाम से जारी आधार कार्ड, पासपोर्ट, पेन कार्ड में मेरा वास्तविक नाम मोहम्मद हासिम (MOHAMMD HASIM) पिता नियाज अहमद (NIYAJ AHAMED) अंकित है जिसे आगे भविष्य में मैं अपने संपूर्ण शैक्षणिक अभिलेखों में सहीं वास्तविक व परिवर्तित / संशोधित नाम मोहम्मद हासिम (MOHD HASIM) पिता नियाज अहमद (NIYAJ AHAMED) लिखना/संशोधन करना चाहता हूं।

दुर्ग

दिनांक 28.6.2024

आवेदक

मोहम्मद हासिम (MOHAMMD HASIM) पिता नियाज अहमद (NIYAJ AHAMED) निवासी मकान नंबर-317, वार्ड नंबर-20, सुपेला, थाना-सुपेला भिलाई, तहसील व जिला दुर्ग (छ.ग.) मोबाईल नंबर- 7000521930

**|| न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग, जिला दुर्ग ||**

रा.प्र.क्र. 202402100400213 / अ-6-अ/ वर्ष 2023-24

**//उद्घोषणा//**

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि रा.प्र.कं 202402100400213/अ-6-अ वर्ष 2023-24 आवेदकगण घनश्याम पिता पाहरू व अन्य-01 निवासी ग्राम तिरगा तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा मौजा ग्राम-झोला प.ह.नं. 28 स्थित भूमि खसरा नंबर 854, 873 रकबा 0.050, 0.040 हे. में आवेदकगण के नाम राजस्व अभिलेख मे दर्ज है, खसरा नंबर 854, 873 रकबा 0.050, 0.040 हे. ऑनलाईन में त्रुटिवश परिवर्तित भूमि दर्ज हो गया है, त्रुटिपूर्ण दर्ज हो जाने से उक्त त्रुटि को सुधार किये जाने बाबत आवेदन पत्र माननीय अनुविभागीय अधिकारी (रा.) दुर्ग के समक्ष पेश किया गया है। जो जांच हेतु इस न्यायालय को प्राप्त हुआ है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत दिनांक 12/07/2024 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते हैं । समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 21/06/2024 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया।

जारी दिनांक- 21/06/2024

सुनवाई दिनांक- 12/07/2024

मुहर

**अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग**

**मामले की श्रेणीः राजस्व**

संदर्भः जिला दुर्ग तहसील-पाटन प.ह.न. 00028 गुड़ियारी ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक आरडी 202324430308100011

**//ईश्तहार//**

तहसील पाटन के पहन 00028 के अंतर्गत ग्राम गुड़ियारी के वर्तमान भूमिस्वामी निर्मल कुमार आ जगदानंद पिता/पति- पता-रायपुर के द्वारा धारित भूमि खसरा क्रमांक 172 (0.2500), 177/1 (1.8800), 178/1 (1.2900), 216 (0.1700), 238 (0.0800) में प्रस्तावित भूमिस्वामी/ क्रेता राजीव कुमार पिता/पति-निर्मल झा पता-रायपुर के नाम पर पंजीयन/फौती होने के उपरात नामांतरण/ अभिलेख दुरुस्ती/ खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीनत है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनाक 22/07/2024 को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपति स्वयं / अधिवक्ता/ आम मुख्तयार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनाक 28/06/2024 को जारी किया जाता है।

मुहर

**अतिरिक्त तहसीलदार पाटन**

**न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग 2**

**मामले की श्रेणीः राजस्व**

**संदर्भः- जिला - दुर्ग तहसील-दुर्ग प.ह.न.- 00041 तितुरडीह ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक- आरडी 202324430103800031**

**//ईश्तहार//**

तहसील दुर्ग के प.ह.न. 00041 के अंतर्गत ग्राम तितुरडीह के वर्तमान भूमिस्वामी समीर बंसोड़ पिता/पति-स्व. रमेश बंसोड़ पता-शिवाजी नगर तितुरडीह दुर्ग, कुंदा दिनेश पाटिल पिता/पति-स्व.रमेश बंसोड़ पता-शिवाजी नगर तितुरडीह दुर्ग के द्वारा धारित भूमि खसरा क्रमांक 4/56 (0.0085) में प्रस्तावित भूमिस्वामी/ क्रेता समीर बंसोड़ पिता/ पति-स्व. रमेश बंसोड़ पता-शिवाजी नगर तितुरडीह दुर्ग, कुंदा दिनेश पाटिल पिता/पति-स्व. रमेश बंसोड पता-शिवाजी नगर तितुरडीह दुर्ग के नाम पर पंजीयन/फ़ौती होने के उपरांत नामांतरण / अभिलेख दुरुस्ती / खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक 15/07/2024 को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय नायब तहसीलदार दुर्ग 2 पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं / अधिवक्ता / आम मुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 20/06/2024 को जारी किया जाता है।

मुहर

**नायब तहसीलदार दुर्ग**

### जिला अस्पताल दुर्ग में स्टॉप डायरिया कैंपेन 2024 का शुभारंभ

**दुर्ग।** कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी की अध्यक्षता में जिला अस्पताल में स्टॉप डायरिया कैंपेन 2024 का उद्घाटन किया गया। जिसमें 05 वर्ष से कम आयु के बच्चों में दस्त रोग से होने वाले मृत्यु दर शून्य करने का लक्ष्य रखा गया है। इस कार्यक्रम के तहत छोटे बच्चों वाले समस्त घरों में मितानिनों के माध्यम से ओ.आर.एस. पैकेट व जिंक की गोलियां वितरित किया जायेगा। कलेक्टर सुश्री चौधरी के द्वारा समस्त आम जनता से अपील की गयी है कि ज्यादा से ज्यादा इस कार्यक्रम का लाभ उठाये। उन्होंने जिला चिकित्सालय में भर्ती मरीजों को ओ.आर.एस. पैकेट एवं जिंक की गोलियां वितरित की।

**//आम सूचना//**

कार्यालय रजिस्ट्रीकरण अधिकारी एस.ई. रेल्वे कर्मचारी उपभोक्ता सहकारी भंडार चरोदा पंजीयन क्रमांक 1872 के मतदाता सूची को प्रथम प्रकाशन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी खगेश देशमुख द्वारा दिनांक 01.07.2024 को कर दिया गया है। संस्था के सदस्यों को तत्संबंध में किसी प्रकार की दावा/ आपत्ति यदि हो तो मेरे द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति श्री अभिषेक अग्रवाल, सदस्य को स्थान कार्यालय रजिस्ट्रीकरण अधिकारी एस.ई. रेल्वे कर्मचारी उपभोक्ता सहकारी भंडार चरोदा पंजीयन क्रमांक 1872 में दिनांक 01.07.2024 से 08.07.2024 तक सप्रमाण प्रस्तुत कर सकते है। सदस्यों से प्राप्त दावा आपत्ति का निराकरण संस्था के रजिस्ट्रीकरण अधिकारी द्वारा दिनांक 11.07.2024 को समय दोपहर 12.00 बजे स्थान संस्था कार्यालय में किया जाएगा। तत्पश्चात अंतिम मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन कर दिया जाएगा।

**(खगेश देशमुख)**

**रजिस्ट्रीकरण अधिकारी**

**एस.ई.रेल्वे कर्मचारी उपभोक्ता सहकारी भंडार चरोदा**

**पंजीयन क्रमांक 1872**

**// न्यायालय तहसीलदार पाटन, जिला दुर्ग छ.ग. / /**

**रा.प्र.क्र. 202406100900160 अ-6 वर्ष 2023-24**

**//ईश्तहार//**

एतद द्वारा सर्व साधारण एवं ग्राम तरीघाट प.ह.नं. 36 तहसील पाटन जिला दुर्ग के आम जनता को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि आवेदक संतोष कुमार साहू पिता गैंदूराम साहू निवासी ग्राम तरीघाट तहसील पाटन द्वारा ग्राम तरीघाट पहनं. 36 तहसील पाटन जिला दर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 701/1 रकबा 0.60 हे. में से रकबा 0.35 हे. भूमि को भूमिस्वामी गैंदूराम पिता श्रीराम द्वारा आवेदक के पक्ष में पंजीकृत दानपत्र दिनांक 08.04.2024 को निष्पादित आधार पर आवेदक द्वारा उक्त भूमि को अपने नाम नामांतरण दर्ज किये जाने बाबत आवेदन आधार पर प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतः आवेदक संतोष कुमार साहू पिता गैंदूराम साहू निवासी ग्राम तरीघाट तहसील पाटन द्वारा पंजीकृत दानपत्र से उपरोक्त दर्षित दानप्राप्त भूमि आवेदक के नाम नामांतरण की कार्यवाही में जिस किसी व्यक्ति/संस्था को आपत्ति हो तो आप अपनी लिखित आपत्ति प्रकरण में सुनवाई तिथि 18.07.2024 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि के पष्चात प्राप्त दावा / आपत्ति पर किसी प्रकार का विचार नही किया जावेगा ।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं मदमुद्रा के साथ आज दिनांक 25.06.2024 को जारी किया जाता

मुहर

**तहसीलदार**

**पाटन, जिला- दुर्ग (छ.ग.)**

**// न्यायालय तहसीलदार पाटन, जिला दुर्ग छ.ग.//**

**रा.प्र.क. 202406100900175 अ-6 वर्ष 2023-24**

**//ईश्तहार//**

एतद द्वारा सर्व साधारण एवं ग्राम करसा प.ह.नं. 12 तहसील पाटन जिला दुर्ग के आम जनता को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि आवेदकगण भानूप्रताप बंजारे पिता स्व. कार्तिक राम अन्य 06 निवासी औरी द्वारा ग्राम करसा तहसील पाटन जिला दुर्ग स्थित अपने पिता कार्तिक राम आ. अभिनाथ के नाम पर दर्ज भूमि खसरा नंबर 1259 रकबा 0.13 हे. भूमि में दर्ज भूमिस्वामी का दिनांक 13.02.2022 को फौत होने से आवेदक अपने एवं सभी वैधवारिसानों का नाम फौती नामांतरण दर्ज किये जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतः आवेदकगण भानूप्रताप बंजारे पिता स्व. कार्तिक राम अन्य 06 द्वारा निवासी औरी द्वारा द्वारा प्रस्तुत उपरोक्तानुसार फौती नामांतरण की कार्यवाही में जिस किसी व्यक्ति / संस्था को आपत्ति हो तो आप अपनी लिखित आपत्ति प्रकरण में सुनवाई तिथि 22.07.2024 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त दावा / आपत्ति पर किसी प्रकार का विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं मदमुद्रा के साथ आज दिनांक 27.06.2024 को जारी किया जाता

मुहर

**अतिरिक्त तहसीलदार**

**पाटन, जिला- दुर्ग (छ.ग.)**

**न्यायालय तहसीलदार दुर्ग**

**मामले की श्रेणीः राजस्व**

संदर्भः जिला- दुर्ग तहसील-दुर्ग प.ह.न.- 00019 दुर्ग ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक- आरडी 202324430103900190

**//ईश्तहार//**

तहसील दुर्ग के प.ह.न. 00019 के अंतर्गत ग्राम दुर्ग के वर्तमान भूमिस्वामी चैतीबाई डीमर ध.प. मनहरण लाल दीमर पिता/पति-पता-मठपारा, चण्डीचौक, दुर्ग. के द्वारा धारित भूमि खसरा क्रमांक 724/36(0.0100) में प्रस्तावित भूमिस्वामी/ क्रेता ना.बा. अक्षय ढीमर पिता/ पति-स्व. कृष्णा ढीमर वली माता श्रीमती पूर्णिमा ढीमर पता-राजीव नगर, दुर्ग, ना.बा. यामिनी ढीमर पिता/ पति-स्व. कृष्ण ढीमर वली माता श्रीमती पूर्णिमा ढीमर पता-राजीवनगर, दुर्ग, श्रीमती पूर्णिमा ढीमर पिता/पति-स्व. कृष्णा ढीमर पता-राजीव नगर, दुर्ग, ऐन कुमार ढीमर पिता/पति-स्व. मनहरण लाल ढीमर पता-राजीव नगर, दुर्ग के नाम पर पंजीयन /फ़ौती होने के उपरांत नामांतरण / अभिलेख दुरुस्ती/ खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक 12/07/2024 को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय तहसीलदार दुर्ग पर की जावेगी। उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं/ अधिवक्ता/ आममुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 27/06/2024 को जारी किया जाता है।

मुहर

**तहसीलदार दुर्ग**

**//न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग, जिला दुर्ग ||**

रा.प्र.क्र. 202406103300009 /अ-6/वर्ष 2023-24

**//उद्घोषणा//**

एतद द्वारा सर्वसाधारण को किया जाता है कि रा.प्र.क्र. 202406103300009/अ-6 वर्ष 2023-24 आवेदक यशवंत पिता कार्तिक राम (अन्य-09) निवासी-ग्राम गनियारी, पोष्ट रसमड़ा, तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा मौजा ग्राम गनियारी प.ह.नं. 21 रा.नि.म. अंजोरा (ख) तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 515/1, 515/2 रकया 0.2000, 0.2000 हे. भूमि को विक्रेतागण जगत राम पिता गोविन्द राम, टीकाराम, स्टेप सिंह दोनों पिता गैदू पनियाबाई पति स्व. गैंदू साहू निवासी-ग्राम गनियारी तहसील व जिला दुर्ग दिनांक 22/04/1989 को क्रय किया गया था, उक्त खसरा एवं रकबा की भूमि को भूलवश प्रमाणीकरण नहीं कराया गया था, क्रेता कार्तिक राम पिता सखन केंवट का स्वर्गवास दिनांक 13.11.2014 पश्चात वर्तमान में कार्तिक राम पिता सखन केंवट वारिसानो के द्वारा प्रमाणीकरण करने हेतु आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्राप्त हुआ है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत दिनांक 09/07/2024 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते हैं। समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

आज दिनांक 13/06/2024 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया ।

**जारी दिनांक- 13/06/2024**

**सुनवाई दिनांक- 09/07/2024**

मुहर

**अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग**

**|| न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग, जिला दुर्ग ||**

**रा.प्र.क्र. 202402103300018 /अ-74/ वर्ष 2023-24**

**//उद्घोषणा//**

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि रा.प्र.क्रं. 202406103300018 चन्द्रजीत पिता लक्ष्मीनारायण निवासी जवाहर नगर दुर्ग, तहसील व जिला दुर्ग के द्वारा ग्राम खुरसुल तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि खसरा नंबर 499/1 रकबा 2.97 है. भूमि जो कि आवेदक के नाम पर वर्तमान राजस्व अभिलेख में दर्ज है, आवेदक को पूर्व में मुल ऋण पुस्तिका प्राप्त हुआ था जो कही गुम हो जाने पर डुप्लीकेट ऋण पुस्तिका प्रदाय करने हेतु इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतएव इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या दावा हो तो वह नियत दिनांक 11/07/2024 तक स्वयं अथवा अपने विधिमान्य अभिकर्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते हैं । समयावधि पश्चात् आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा ।

आज दिनांक 24/06/2024 को यह उद्घोषणा मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पद मुद्रा के साथ जारी किया गया ।

**जारी दिनांक- 24/06/2024**

**सुनवाई दिनांक- 11/07/2024**

मुहर

**अतिरिक्त तहसीलदार दुर्ग**

## संक्षिप्त-खबर

### तीन नये कानून दंड से न्याय की ओर – गजेंद्र यादव

**दुर्ग ( समय दर्शन )1** जुलाई से देश में तीन नये कानून करने अवसर आयोजित कार्यक्रम में विधायक गजेंद्र यादव शामिल हुए। सेक्टर 06 पुलिस कंट्रोल रूम में आयोजित कार्यक्रम में नये कानून, भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए) के प्रभाव और विशेषताओ की जानकारी दी गई। विधायक गजेन्द्र यादव ने उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए नए कानून के लागू होने पर सभी को बधाई दी। उन्होंने दण्ड से न्याय की ओर वाक्यांश की सराहना करते हुए इसके प्रति नागरिकों की जागरूकता सुनिश्चित करने की बात कही। कार्यक्रम में अतिथियों ने कहा की कानूनों के बनने का लाभ लेने के लिए यह आवश्यक कि नागरिकों को इनका ज्ञान होगा। उन्होंने सभी नागरिकों को कानून के प्रति स्वयं सजग रहने एवं आस-पास के लागों को भी जागरूक करना चाहिए। आई जी रामगोपाल गर्ग ने नए कानून के तहत लागू हुए ई-एफ्आईआर प्रावधान, इसके महत्व और लाभ के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। पुलिस प्रशासन एवं न्यायालय के उत्तरदायित्व को भी बताया और नागरिकों को आश्वासित किया कि नए कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु पुलिस प्रशासन पूरा प्रयास करेगी। कार्यक्रम में विधायक रिकेश सेन, संभाग सत्यनारायण राठौर, आईजी राम गोपाल गर्ग, कलेक्टर ऋचाप्रकाश चौधरी, एसपी जीतेन्द्र शुक्ला, डीएफ्ओ चंद्रशेखर परदेशी, कमिशनर देवेश ध्रुव सहित पुलिस विभाग के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

### डॉक्टर डे पर खंड चिकित्सा अधिकारी पाटन का एसडीएम पाटन ने किया सम्मान

**पाटन ( समय दर्शन )।** डॉक्टर डे पर आज सोमवार को पाटन ब्लॉक के खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. आशीष शर्मा का एसडीएम पाटन दीपक कुमार निकुंज ने सम्मान कर बधाई दिया। उन्होंने पाटन ब्लॉक में स्वास्थ्य सेवा के लिए स्वास्थ्य विभाग की सराहना किया। बता दे की डॉक्टर आशीष शर्मा के मार्गदर्शन नेतृत्व में पाटन ब्लॉक में स्वास्थ्य विभाग लोगो को काफी स्वास्थ्य सुविधा लगातार प्रदान कर रहे है। इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग का मैदानी अमला भी काफी अच्छा काम कर रहे है।

### ओ.टी. में महिला मरीज से मारपीट, शिकायतकर्ता का बयान हुआ दर्ज विकासखंड बिल्हा की घटना

**बिलासपुर।** 27 मार्च 2024 विकास खंड बिल्हा के अस्पताल में एक महिला मरीज के साथ ऑपरेशन थिएटर में स्टाफ द्वारा की गई मारपीट और पीड़िता के पति से संविदा कर्मचारी द्वारा ली गई रिश्वत की घटना पर शिकायतकर्ता के बयान आज मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के कार्यालय में जांच अधिकारी द्वारा दर्ज किए गए।

27 / 28 मार्च को इसी घटना के संबंध में उभय पक्षों ने थाना प्रभारी बिल्हा को लिखित शिकायत दी थी। सक्षम जांच एजेंसी होने के बावजूद थाना प्रभारी ने कार्य स्थल पर रिश्वतखोरी, मरीज के साथ मारपीट की घटना पर बयान दर्ज न कर प्रकरण को मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में विभागीय जांच निवेदन के साथ भेजा। बिल्हा का अस्पताल अपने नकारात्मक चिकित्सकीय लापरवाही के लिए खासा बदनाम है। गर्भवती महिला को गलत ब्लड ग्रुप चढ़कर जान से खिलवाड़, मरीजों से पैसे की डिमांड, आउटसोर्सिंग द्वारा पैथोलॉजी एवं सोनोग्राफी की शिकायत यहां आम है।

# किड्स एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन इंग्लिश मीडियम स्कूल बंसुला में प्रवेश उत्सव मनाया गया

**बसना( समय दर्शन )।** किड्स एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन इंग्लिश मीडियम स्कूल बंसूला बसना मे धूमधाम से प्रवेश उत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर बतौर अतिथि पधारें डॉ. मनीष भारद्वाज ऋ्रू के द्वारा नेशनल डॉक्टर दिवस के उपलक्ष्य में बच्चों के लिए वेट मशीन, स्वास्थ्य किट एवं दरी प्रदाय कर बच्चों को स्वस्थ रहने की सलाह दिए। डॉ मनीष भारद्वाज को स्कूल समिति द्वारा आभार व्यक्त किया गया । इस दौरान स्कूल प्रबंधक आर.के.दास, प्राचार्य भगवती जगत, नंदनी प्रधान , गीतांजलि तिवारी, तन्नू निशा, हसीना बेगम, उषा बीसी, बासमती जगत, हेमा साव, दीपिका साव एवं पाठकगण उपस्थित रहे। डॉक्टर बिधान चंद्र रॉय की स्मृति में पूरे देश भर में 1 जुलाई को डॉक्टर्स-डे मनाया जाता है।

**नेशनल डॉक्टर्स डे 2024 का महत्व**- राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस का महत्व जीवन बचाने, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और जरूरतमंद व्यक्तियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करवाने वाले डॉक्टरों को सम्मानित करने और उनके योगदान को स्वीकार करने में निहित है। नेशनल डॉक्टर्स डे 2024 की थीम पर हर साल नेशनल डॉक्टर्स डे मनाने के लिए एक नई थीम रखी जाती है। बात अगर इस साल की थीम की करें तो नेशनल डॉक्टर्स डे 2024 की इस थीम 'हीलिंग हैंड्स, केयरिंग हार्ट्स' है। जिसका मतलब है कि 'हम मेडिकल प्रोफेशनल्स के प्रयासों और उनके सभी योगदानों को पहचानते हैं' नेशनल डॉक्टर्स डे पर इस साल की थीम डॉक्टरों द्वारा अपने चिकित्सा अभ्यास में लाए जाने वाले समर्पण, करुणा और सहानुभूति पर जोर देती है।

# तेली गुंडरा में मानस संगोष्ठी का आयोजन, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भी हुए शामिल

**पाटन/समय दर्शन।** तहसील मानस संघ पाटन द्वारा आयोजित प्रेमपावनी भागीरथी मानस संगोष्ठी का आयोजन रविवार को ग्राम तेलीगुण्डरा में सम्पन्न हुआ कार्यक्रम में प्रथम पहर एवं शुभारंभ के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल थे श्री बघेल जी ने जन मानस को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी संत गोस्वामी तुलसीदास जी के आभारी है जिन्होंने हिन्दी भाषा के अलावा 30 भाषाओं में रामायण की रचना लिखकर आज घर घर में स्थापित किया और हम सब उनका चरित्र की बखान करते हुवे आत्मसात कर जीवन में उतारने का प्रयास कर रहे हैं पहले जमाने में हमारे पूर्वजों ने दैनिक काम से निवृत होकर गुढ़ी चौक चौराहा में रामायण का पाठ करते थे लेकिन

आज गांव-गांव में प्रतियोगिता का रूप लिया है और मानस पुत्रों के द्वारा स्वान्त:सुखाय की कल्पना करते हुये साकार कर रहे हैं । श्री बघेल ने मानस पर चर्चा करते हुए कहा कि भरत ने भगवान राम को भाई नहीं माना उन्हें सदैव ईश्वर मानकर उनकी पूजा की और माता कैकेई का त्याग किया गुरू को भी ईश्वरके समकक्ष माना गया है गुरू के बिना आध्यात्मिक ज्ञान नहीं मिलता और सेवाभाव से काम करने से ही पुण्य की प्राप्ति होती है । उन्होंने तहसील मानस संघ को भवन निर्माण के लिए सहयोग करने के लिए आश्वस्त किया।। कार्यक्रम में स्वागत भाषण के साथ मांगपत्र अध्यक्ष टीकाराम साहू ने दिया ईस अवसर मानस मर्मज्ञ नीलकंठ ठाकुर बोरीद गजानंद अवस्थी पहडोर मनहरण वर्मा अरसनारा लेखनी वर्मा करेला पीपलेश्वर देशमुख रेवेन्द्र वैष्णव तथा संगीत कारों का शाल एवं मोमेन्टो से सम्मान किया गया समापन सांसद विजय बघेल की धर्मपत्नी श्रीमती रजनी बघेल के आतिथ्य में किया गया कार्यक्रम का संचालन पुनेश्वर साहू हितेन्द्र साहू मुरली दास वैष्णव थानूराम देवांगन एवं आभार डा. गुलाब साहू ने की कार्यक्रम में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर में जाचकर दवाई वितरण किया गया कार्यक्रम में जिला पंचायत उपाध्यक्ष अशोक कुमार साहू दिनेश साहू महेंद्र वर्मा खेमलाल साहू धनराज साहू मेहत्तर वर्मा पूरनलाल साहू रामनारायण वर्मा दयानंद साहू अरूण कश्यप कृष्णकुमार साहू चेतन देवांगन वेदराम साहू भुनेश्वरी मंडावी आरती साहू गरीबदास साहू चिञसेन श्यामलाल साहू दादूराम कामता साहू मूलचंद सनत साहू सहित मानस संघ के सभी परिक्षञ के पदाधिकारियो एवं ग्रामीण उपस्थित थे ।

# सरस्वती शिशु मंदिर तरीघाट में मनाया गया प्रवेश उत्सव

- **गरीब बच्चो को मिलेगा निशुल्क गणवेश, प्रतिभावान बच्चो का सम्मान किए जाने का लिया निर्णय**

**पाटन ( समय दर्शन )।** 1 जुलाई 2024 को सरस्वती शिशु मंदिर तरीघाट में भव्य रूप से प्रवेश उत्सव मनाया गया। जिसमें मां सरस्वती की पूजन वंदन हवन पूजन के साथ पढ़ने वाले भैया बहनों को समिति सदस्य एवं जन प्रतिनिधियों के द्वारा निशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण गया। इस अवसर में संकुल समन्वयक ऋषि कुमार साहू, पूर्व जनपद सदस्य संतराम कुंभकार, संयोजक जयराम सिन्हा,यंशवत साहू जिला समिति सदस्य, श्रीमती चंद्रिका साहू प्रदेश उपाध्यक्ष साहू संघ छत्तीसगढ़ प्रदेश, वैष्णो जी एवं पालक गण श्रीमती रानू साहू, अर्चना साहू, सुमन साहू, पिंकी सिन्हा, विद्यालय के प्रवेश द्वार पर बच्चों को तिलक अक्षत्र लगाकर स्वागत किया गया।इस अवसर पर देवनारायण साहू प्रधानाचार्य,आचार्य श्रीमती नारायणी, माया, अश्वनी, रेखा, वर्षा, कल्पना, डेनिसा, नेहा उपस्थित रहे अंत में बच्चों को खीर खिलाकर मुंह मीठा कराया गया और जो कमजोर गरीब वर्ग के बच्चे है उसे प्रबंधन समिति द्वारा गणवेश एवं कापी देने का निर्णय लिया गया एवं जो प्रतिभावान छात्र कक्षा में स्थान प्राप्त करने वाले को 15 अगस्त के दिन सम्मानित करने की योजना बनायी गयी।

# थाना प्रभारी बसना ने नये कानून की दी जानकारी

**बसना( समय दर्शन )।** भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 का 01 जुलाई 2024 से पूरे देश भर में लागू हो गया है। इसी तारतम्य में थाना परिसर बसना में थाना प्रभारी शशांक पौराणिक के द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों के दिशा निर्देशों पर कार्यक्रम आयोजित कर नये कानून की जानकारी दी गई।

बसना थाना प्रभारी शशांक पौराणिक ने बताया कि, भारतीय संसद ने तीन ऐतिहासिक कानून भारतीय दंड संहिता 1860 , दंड प्रक्रिया संहिता 1973 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम को संशोधित कर भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक संहिता 2023और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 से प्रतिस्थापित कर आपराधिक न्याय प्रणाली में एक नवपरिवर्तन कारी कदम उठाया है। भारतीय मूल्यों पर आधारित ये नये कानून दंडात्मक से न्याय उन्मुख में बदलाव का संकेत देते हैं जो भारतीय न्याय व्यवस्था को प्रतिबिंबित करता है। कानून आई पी सी से बी एन एस (भारतीय न्याय संहिता)में परिवर्तन हो गया है। धारा 173(1) में नागरिकों को मौखिक अथवा इलेक्ट्रॉनिक संचार (ई -एफआई आर) बिना उस क्षेत्र के विचार किये जहां अपराध किया गया है।एफ आई आर दर्ज करने का अधिकार

दिया गया है। धारा 173(2)(1) के तहत् नागरिक बिना किसी देरी के पुलिस द्वारा अपनी एफ्आईआर की एक नि:शुल्क प्रति प्राप्त करने के हकदार हैं। धारा 193(3)(द्वद्व) के तहत् पुलिस को 90 दिनों के भीतर जांच की प्रगति के बारे में पीड़ित को सूचित करना अनिवार्य होगा। धारा 184(1) के अनुसार पीड़िता की मेडिकल जांच उसकी सहमति से और अपराध की सूचना मिलने के 24 घंटे के भीतर की जायेगी। धारा 184(6) के तहत मेडिकल रिपोर्ट चिकित्सक द्वारा 7 दिनों के भीतर भेजी जायेगी। धारा 396 में पीड़ित नागरिकों को मुफ्त चिकित्सा एवं मुआवजे का अधिकार, आपराधिक न्याय प्रणाली को अधिक पारदर्शी,जबावदेह और सुलभ बनाया गया है। भारतीय न्याय संहिता में आई पी सी में धाराओं की संख्या 511 से बी एन एस 388 कर दी गई है। 20 नये अपराध जोड़े गये हैं। 6 छोटे अपराधों के लिए सामुदायिक सेवा का प्रावधान किया गया है। महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराधों को एक अध्याय में समेकित किया गया है। धारा 70(2) में सामूहिक बलात्कार में मृत्यु दण्ड का प्रावधान किया गया है। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता में धाराओं की संख्या 484 से बढ़ाकर बी एन एस एस 531 की गई है। वहीं 09 नई धारायें जोड़ी गई है तो 14 धाराओं को निरस्त किया गया है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम में आई ई ए धाराओं की संख्या 167 से बढ़ाकर बी एस ए 70 की गई है। इसमें 24 धारायें बदली गई,02 नये धारायें जोड़ी गई है और 06 धारायें निरस्त की गई है। न्याय प्रणाली में प्रौद्योगिकी का समावेश, पीड़ित केन्द्रित दृष्टिकोण , अपराध एवं दंड को पुनर्भाषित किया गया है।

नायब तहसीलदार ललित सिंह ने नया कानून भारतीय न्याय संहिता बारे में जानकारी से अवगत कराया। पुलिस प्रशासन के द्वारा आयोजित कार्यक्रम को महेन्द्र साहू ए एस आई,अधिवक्ता अनिक दानी, प्रभाकर मिश्रा,शीत गुप्ता, वरिष्ठ पत्रकार सेवक दास दीवान,रमेश अग्रवाल ने भी संबोधित करते हुए नये कानून के विषयों पर अपने-अपने विचारों को व्यक्त किया। अंत में राष्ट्रगान गाकर कार्यक्रम का समापन किया गया।

उक्त अवसर पर भाजपा नेता रमेश अग्रवाल, गजेन्द्र साहू अध्यक्ष नगर पंचायत बसना, अभिमन्यु जायसवाल विधायक प्रतिनिधि, कांग्रेस नेत्री मंदाकिनी साहू,शीत गुप्ता, अभय धृतलहरे, शुकदेव वैष्णव,सी डी बघेल,नरेन्द्र साहू,नवीन साव,केशव साव,सदानंद साहू,अरूण साहू के अलावा समस्त पुलिस स्टाफ बसना थाना क्षेत्र के समस्त कोटवार सहित सैंकड़ों की संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

# दंतेश्वरी मईया शक्कर कारखाना में वृक्षारोपण

**बालोद ( समय दर्शन )।** जिल में चलाए जा रहे सघन वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत कलेक्टर इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल, गणमान्य नागरिक पवन साहू सहित अन्य जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारी-कर्मचारियों ने आज करकाभाट स्थित दंतेश्वरी मईया शक्कर कारखाना में वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर कलेक्टर श्री चन्द्रवाल ने सम्पूर्ण जीव जगत के लिए पेड़-पौधों की महत्ता एवं उपयोगिता के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि मात्र पौधों का रोपण करना ही पर्याप्त नही है वरन् उनका सुरक्षा एवं देखभाल करना भी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने शक्कर कारखाना के अधिकारी-कर्मचारियों को रोपे गए पौधों का समुचित देखभाल सुनिश्चित करने प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर जनपद पंचायत बालोद के अध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता साहू, एसडीएम श्रीमती शीतल बंसल, कारखाना प्रबंधक राजेन्द्र प्रसाद राठिया सहित गणमान्य नागरिक तोमन साहू, राकेश यादव, छगन देशमुख, त्रिलोकी साहू, जितेन्द्र साहू तथा उप संचालक कृषि जीएस धुर्वे सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

# निषाद समाज का ठाकुराइन टोला परिक्षेत्र का चुनाव, खट्टी निवासी मनोहर निषाद बने अध्यक्ष

**पाटन ( समय दर्शन )।** निषाद समाज का ठाकुरईन टोला परिक्षेत्र का चुनाव विधिवत सम्पन्न हुआ। चुनाव प्रभारी के रुप मे दुर्ग जिला निषाद समाज संगठन ज़िला दुर्ग के पदाधिकारी सह सचिव ओमप्रकाश निषाद मुख्य चुनाव अधिकारी, देवनाथ निषाद उप संगठन सचिव एवं मलेश निषाद अंकेक्षक सह चुनाव अधिकारी के साथ सहयोगी लखन लाल निषाद प्रांतिय युवा प्रकोष्ठ सचिव एवं चिरपोटी परिक्षेत्र के संगठन सचिव लक्ष्मन निषाद रहे।

चुनाव प्रक्रिया के पूर्व समस्त पदाधिकारीयों ने भक्त गुहा निषाद राज एवं भगवान श्रीरामचन्द्र जी की पूज़ा अर्चना की तत्पश्चात परिक्षेत्र के पदाधिकारीयों द्वारा चुनाव अधिकारीयों का स्वागत गुलाल,अक्षत से किया गया। ज़िला के पदाधिकारी मलेश निषाद एवं ओमप्रकाश निषाद ने चुनाव प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए अपने उद्धबोधन मे चुनाव सम्बन्धि समस्त जानकारी से परिक्षेत्रिय निषाद समाज को अवगत कराया गया एवं

चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ किया गया। जिसमें पाली एवं परिक्षेत्र से उपस्थित निषाद समाज निर्विरोध चुनाव सम्पन्न कराया गया था उसे सभी ने हाथ उठाकर एवं तालियों से समर्थन किया। तत्पश्चात नियमानुसार चुनाव के समस्त प्रत्याशीयों से नामांकन की प्रक्रिया पूर्ण किया गया। एवं प्रस्तावक समर्थकों ने पूर्ण समर्थन देते हुए निम्न पदाधिकारियों का चयन किया गया। मनोहर निषाद - अध्यक्ष ग्राम खट्टी , तिलेश्वर निषाद - उपाध्यक्ष, टोला गजेन्द्र निषाद -उपाध्यक्ष, तुलसी समाराम निषाद - सचिव अटारी नकुल निषाद- सह सचिव तुलसी रामेश्वर निषाद-कोषाध्यक्ष परसदा लव कुमार निषाद-सह कोषाध्यक्ष लमकेनी रामानंद निषाद - अंकेक्षक पेंड्री श्याम लाल निषाद - संरक्षक आमदी श्रीमति पूर्णिमा निषाद - खट्टी एवं श्रीमति सतरुपा निषाद टोला का चयन सर्वसम्मति से किया गया। तत्पश्चात सभी नव निर्वाचित पदाधिकारीयों का चुनाव अधिकारीयों ने बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए गुलाल एवं अक्षत से स्वागत एवं सम्मान किए।बैठक मे विशेष रूप से नेतराम निषाद गुमा , सुकलवा गोमची, शिव कुमार हथबंद, सामंत निषाद कन्हेरा ,सुरेश बठेना ,कृष्णा निषाद सोनपुर, श्याम निषाद रायपुर, टेनसिंग सिप्कोना श्रीमति बीना निषाद खट्टी एवं परसदा, ठकुराइन टोला परिक्षेत्र के निषाद बन्धु बड़ी संख्या मे उपस्थित रहे।यह कार्यक्रम जानकारी जिला युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्री विरेन्द्र निषाद जी द्वारा दी गई।

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग ( छ.ग. ), पिन-491111 से मुद्रित कर 65/1920, परशुराम नगर प्रोफेसर कालोनी, रायपुर ( छ.ग. )
पिन- 492001 से प्रकाशित। संपादक :- दामोदर राव, फोन नं.-0771-4218364, मो. 9303404360, ईमेल- samaydarshanraipur@gmail.com, RNI: CHHHIN/2018/76878, डाक पंजीयन /रायपुर संभाग/63/2022-24